* ओ३म् *

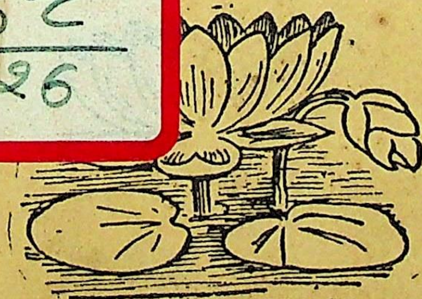
प्रभु प्रार्थना

सम्पादक—

श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज

वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर

(ज़ि० सहारनपुर, उत्तर प्रदेश)



प्रभु प्रार्थना

एक याद तुम्हारी याद रहे,
और दिल में किसी की याद न हो।
मेरे दिल की सुन्दर नगरी में,
कोई तेरे बिना आबाद न हो॥

ी आँखें तेरे ही,
भगवन् प्यासी हैं।
ओ देर लगाओ नहीं,
नये दिल बरबाद न हो॥

ँ।
में,
॥

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

चौथी बार १००० | फाल्गुण सं० २०२७ वि० | मूल्य ५० पैसे

प्रभु प्रार्थना

एक याद तुम्हारी याद रहे,
और दिल में किसी की याद न हो ।
मेरे दिल की सुन्दर नगरी में,
कोई तेरे बिना आबाद न हो ॥

ी आँखें तेरे ही,
ी भगवन् प्यासी हैं ।
ओ देर लगाओ नहीं,
नये दिल बरबाद न हो ॥

ँ ।
में,
॥

प्रभु-प्रार्थना

सम्पादक—
श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज
वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर
(जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश)



पुस्तक प्राप्ति स्थान—
वानप्रस्थाश्रम पुस्तकालय, ज्वालापुर

चौथी बार १००० | फाल्गुण सं० २०२७ वि० | मूल्य ५० पैसे

ओ३म्

भूमिका

मैं इस आश्रम में सन् १९३० में आया था, तब से यहीं निवास है। एक सप्ताह की ७ प्रार्थनायें पहले लिखी थीं। फिर बढ़ते बढ़ते ५९ की संख्या तक पहुँच गईं। (जब ये लिखी थीं उस समय स्वप्न में भी विचार नहीं था कि ये छपेंगी)। कई सज्जनों ने लिखा था कि इन्हें छपवा दिया जाय। परन्तु मेरी इच्छा नहीं हुई। अब माता शुभकरी जो कि इसी आश्रम में दस-बारह वर्ष से निवास कर रही हैं, बहुत ही सरल व शुद्ध हृदय की और प्रभु विश्वासी हैं, उन्होंने छपवाने का बहुत आग्रह किया, उन्होंने पिछले वर्ष इसका प्रथम संस्करण छपवाया था, जोकि शीघ्र ही समाप्त हो गया। कुछ दिनों पश्चात् दूसरा और तीसरा संस्करण माता जी ने छपवाये जोकि समाप्त हो गये। अब यह चौथा संस्करण भी माता जी की ओर से छप रहा है। इसमें बहुत कुछ पूज्य श्री स्वामी अभयदेव जी महाराज की 'वैदिक विनय' पुस्तक से लिया है और अन्य पुस्तकों से भी इस आशय की कुछ सामग्री संग्रह की गई है। प्रभु करें कि इसके पाठ से जिज्ञासुओं को लाभ हो।

विवेकानन्द

वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

ओ३म्

प्रकाशक का निवेदन

पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज आर्य वानप्रस्थ आश्रम में छत्तीस सैंतीस वर्ष से निवास कर रहे हैं। मैं भी दस-बारह वर्ष से यहाँ आश्रम में रह रही हूँ। श्री स्वामी जी महाराज की लिखी प्रार्थनाएँ जब मैं पढ़ती थी तब इच्छा होती थी कि ये छप जावें तो और भाई बहनों को भी इनसे लाभ हो। परन्तु श्री स्वामी जी महाराज उस समय छपवाने के लिए सहमत नहीं थे। अन्त में मेरे आग्रह पर उन्होंने कृपापूर्वक इन्हें छपवाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। दो वर्ष पूर्व इसका प्रथम संस्करण छप कर आया था। जिसने भी इस पुस्तक को देखा, उसी ने मुक्त कंठ से इसकी प्रशंसा की। कई स्थानों पर सत्संगों में यह प्रार्थनाएँ पढ़ी जाने लगीं इस लिये इसके तीन संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गये। प्रभु प्रेमी सज्जनों की बढ़ती हुई माँग को देखते हुए अब इसका चौथा संस्करण छपवाया जा रहा है। पूर्ण आशा है कि इसके पाठ से आपका मन शाँत और प्रसन्न होगा और प्रभु की ओर आकर्षित होगा।

विनीता

(माता) शुभकरी

वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर

प्रभु-प्रार्थना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव ॥यजु० अ० ३०।म० ३ ॥

अर्थ—हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा कर के हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। जो कल्याणकारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हम को प्राप्त कीजिये।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥यजु० ४।१६॥

अर्थ—हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करनेहारे, सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हमसे कुटिलता युक्त पाप रूप कर्म को दूर कीजिये। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रता पूर्वक प्रशंसा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

ओ३म्

प्रभु-प्रार्थना

(१)

हे प्रभो ! मन को रोकना चाहूँ तो यह दुर्जन नहीं रुकता, मेरा मन मुझे ही हानि पहुँचाता है इसके अन्दर संसार भरा हुआ है। भक्ति केवल बाहर है। यह मन संसार की बातें ही सोचता रहता है। हे भगवन् ! मेरे-तेरे बीच यही एक बाधा है। मैं तो तेरे ध्यान में बैठता हूँ पर अन्दर मन संसार का ही ध्यान करता रहता है। हे नारायण ! आओ, दौड़े आओ। काम, क्रोध लोभ, मोह के पर्वत आगे आ खड़े हैं और भगवन् आप अत्यन्त दूर परली तरफ रह गये हैं। मैं इन पहाड़ों को नहीं लांघ सकता और मुझे कोई रास्ता नहीं मिलता। अतः तुम्हीं मेरी सुध लो, मुझ अशक्त के पास दौड़े आओ। हे प्रभो ! यह तो बताइये कि आपके बिना इस मन का दूसरा कौन प्रेरक है ? आप के सिवाय और कोई यदि मन का प्रेरक हो तो कृपा कर उसका पता ठिकाना बता दीजिये, फिर आप को क्यों कष्ट दूं उसी को जाकर पकड़ूं। विषयों के द्वार रूप ये इन्द्रियाँ बड़ी जबरदस्त हैं। इनका रोकना बहुत कठिन है। ये सदा ही बाहर से विषयों को अन्दर ले आया करती हैं। मन और इन्द्रियों

का सखापन बहुत पुराना होने से ज्यों ही ये इन्द्रियाँ विषयों पर दौड़ती हैं त्यों ही यह मन विषयाकार बन जाता है। अतएव हे परमात्मन्! आप ही अन्त:करण में विराजमान रहें तो ही निस्तार है, अन्दर आपको आसन जमाये देखकर ये विषय बाहर के बाहर ही रहेंगे। इसलिये हे करुणा सागर परमात्मन्! अब वेग से आओ, मेरे अन्तर में आ विराजो।

आप कहेंगे कि तुम ही इन इन्द्रियों को संभालो। देखिये भगवन्! ऐसा न कहिये। मुझसे इन्द्रियों का दमन करते बनता नहीं, मन वश में आता नहीं, सारा अन्धकार ही अन्धकार है। हे प्रभो! अब मुझे हाथ पकड़ कर रास्ता बताओ और अपना साक्षात्कार कराओ।

हे मेरे सर्वस्व ! हे मेरे जीवन आधार ! मैं तुम्हारा स्मरण ऐसी उत्सुकता से करूँ, जैसे किसी पक्षी की माता अण्डे देकर उसे सेती है। कालान्तर में अण्डे फोड़कर छोटे-छोटे बच्चे निकल आते हैं। वे सब भाँति असहाय होते हैं, स्वयं चल फिर नहीं सकते, स्वयं जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते। माता ने जहाँ बिठा दिया बैठ गये, जहाँ लिटा दिया लेट गये, चोंच में चोंच भिड़ा कर जो खिला दिया, खा लिया। न बल, न साहस, हो भी कहाँ से, वे तो अभी सर्वथा असमर्थ हैं। उन्हें छोड़कर माँ दाना लेने के लिये चली जाती है। माँ को आने में कुछ देर हो गई, तो जिस प्रकार वे पक्षहीन बच्चे तड़फड़ाते रहते हैं, बड़ी उत्कंठा, बड़ी उत्सुकता से जिस प्रकार अपनी जननी का स्मरण करते हैं।

हे करुणासागर प्रभो ! उसी प्रकार मैं भी आपका चिंतन-स्मरण करूं। मैं भी तुम्हारे बिना व्याकुल हो जाऊँ, मैं भी तुम्हारे चिरकालीन वियोग को न सह सकूं।

अथवा जैसे तुरन्त की ब्यायी गौ है। उसका एक छोटा सा सुन्दर बच्चा है। वह घास नहीं खाता, भूसा

नहीं खाता, अन्न आदि भी नहीं खा सकता। केवल अपनी माँ के दूध के आधार पर ही रहता है। स्वामी ने उसे माँ से दूर खूंटे में कस कर बाँध दिया है। अब उसे भूख लगी है, माँ से लिपटना चाहता है, वह अपने मुँह से मातृ-स्तनों के मधुर दूध को पान करके अपनी भूख को शाँत करना चाहता है, बार बार-इधर से उधर फुदकता है, रस्सी को तोड़ना चाहता है, खूंटे का चक्कर लगाता है, शरीर को हिलाता है, भांति-भांति की चेष्टाएँ करता है।

उस समय अपनी माता से मिलने की जैसी उसकी उत्कट इच्छा होती है। हे मेरे प्राण-आधार ! वैसी ही उत्सुकता, मुझे आपसे मिलने की हो। मैं उसी प्रकार आपका चिन्तन करता हुआ आपके लिए व्याकुल बना रहूँ।

हे परमात्मन् ! आप सभी प्रकार के सुखों को देने वाले हैं अतः आप मुझे अपने शाश्वत आनन्द में स्थापित करें। क्योंकि मैं, आपके महान् अनन्त आनन्द, पूर्णब्रह्म के साक्षात्कार की सदैव अभिलाषा करता हूँ। जिस प्रकार लोक में पुत्र-वत्सला मातायें अपने प्रिय पुत्रों को मधुर स्तन्य रस का पान कराती हैं उसी प्रकार आप मुझे भी अपने कल्याणरूप शान्त, तृप्तिदायक निरतिशय ब्रह्मानन्द रस का पान कराएँ।

हे प्रभो ! उस आनन्दरूप के साक्षात्कार में प्रतिबंधक सभी प्रकार के दोषों के विनाश के लिए हम आपकी शरण में आये हैं, इसलिए आप हम सब पर प्रसन्न होवें और हम साधकों जिज्ञासुओं को उस महान् आनन्द के लिए योग्य बनायें।

हे सर्वव्यापक सच्चिदानन्द रूप परमात्मन् ! तू ही एकमात्र मेरा है, मेरा अन्य कोई नहीं है ऐसा तू परम प्रेमास्पद, परमानन्द निधि भगवान् मेरे हृदय में प्रकट रूप से निवास कर। मैं तेरे दर्शन की अभिलाषा रखता हुआ एवं सदा तेरा ही चिन्तन करता हुआ तेरे ही समीप रहना चाहता हूँ, मेरी इस अभिलाषा को पूरी कर।

हे मेरे हृदय के प्रियतम, अमर आनन्द ! तुम कहाँ हो, मैं तुम्हारे बिना कैसे और कहाँ रह सकता हूँ ? तुमसे अलग हुए बहुत काल व्यतीत होगया ! आओ, प्रभो, आओ, मैं तुम्हारे बिना बहुत व्याकुल हूँ, अशान्त हूँ।

ऐ मेरे आध्यात्मिक जीवन जल परमात्मन् ! मेरे काठ के कलशों के समान सूखे इन शरीरों में गुनगुनाते हुए, अव्यक्त ध्वनि करते हुए, अपनी अत्यन्त चमकीली छटा दिखाते हुए, ऊजड़ में बस्ती बसाते हुए मेरे हृदय में प्रकट होइये ।

हे मेरे मन रूपी दूज के चाँद ! आप आनन्द की धारा के साथ प्रकट होइये और मुझे आनन्दित कीजिए ।

———

हे प्रभो ! हमें सबल बना दो, जिससे हम प्रलोभनों में न फँस सकें, इन्द्रियों तथा निम्न प्रकृति का दमन कर सकें, अपनी पुरानी बुरी आदतों को बदल सकें, आत्म-समर्पण को पूर्ण तथा सत्य बना सकें।

हे प्रभो ! हमारे हृदय में आकर बैठ जाओ, एक क्षण भी इस स्थान से अन्यत्र कहीं न जाओ। हमें इस योग्य बना दो कि हम सदा सर्वदा तुझ में ही निवास करें।

हे स्नेह और करुणा के सागर आराध्यदेव ! तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है। तुम सच्चिदानन्द-घन हो, तुम सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो, तुम सब के अन्तर्यामी हो, हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो। श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो। हमें आध्यात्मिक अन्तःशक्ति का वर दो, जिससे हम वासनाओं का दमन कर मन पर विजय प्राप्त करें। हम अहंकार, काम, लोभ तथा द्वेष से रहित हों, हमारा हृदय दिव्य गुणों से पूर्ण हो।

हे प्रभो ! जैसे पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए उन पर अपने पर फैला देता है, वैसे ही आप अपनी प्रीति नीति के पक्षों को हम पर फैला दो। आपके साये

में सुरक्षित रहकर हम निर्विघ्न आगे बढ़ते रहें।

हे परमपिता ! आपके पास जो अमृत का खजाना है उसमें से हमें सुख, शान्ति और आनन्द प्रदान करो। हे सबको तृप्त करने वाले प्रभो ! आनन्द रूपी महान् ख़ज़ाने को खोल और हमें निरन्तर सींच, सामने से खुली नहरें बह निकलें।

हे प्रभो ! हम सब वस्तुओं में तुम्हारा ही प्रदर्शन करें, तुम्हारी महिमा का गान करें, केवल तुम्हारा ही नाम हमारे होठों पर और मन में रहे। हम सदा तुम में ही निवास करें, सर्वदा तुम्हारे आनन्द रस का पान करें। हमारी यह इच्छा शीघ्र पूर्ण करो।

———

हे परमेश्वर, हे सच्चिदानन्द स्वरूप, हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, हे निरंजन, निर्विकार, हे सर्वान्तर्या-मिन्, हे सर्वाधार जगत्पते, सकल जगत के उत्पादक, हे अनादे विश्वम्भर, हे करुणावरुणालय, हे निराकार सर्वशक्तिमान् न्यायकारिन्, समस्त संसार की सत्ता के आदि मूल, चेतनों में चेतन, सर्वज्ञ आनन्दघन भगवन् ! जहाँ आपका जाजज्वल्यमान तेज पापियों को रुलाता है वहाँ आपके भक्तों, आराधकों, उपासकों के लिए वह आनन्द प्रदाता है। उनके लिए वही एक प्राप्त करने की वस्तु है, वही उनके ज्ञान विज्ञान, धारणाध्यान की वृद्धि करके उनके सब पाप सन्ताप का नाश कर देता है।

परम आराध्य परम गुरु ! तू सदा पवित्र और उन्नति-कारक प्रेरणा दिया करता है। हम तेरी शरण आये हैं, हमें भी पवित्र प्रेरणा दे। तू ही सब को सुमार्ग दिखाता है, हमें भी सुमार्ग दिखा। हमें ऐसी प्रेरणा कर कि जिससे हम कुमार्ग से हट कर सुमार्ग पर आरूढ़ हों, कुकर्म से निवृत्त होकर सुकर्म में प्रवृत्त हों, कुव्यसनों से विरक्त होकर सत्कार्यों में अनुरक्त हों। साँसारिक काम-नाओं को चित्त से हटाकर तेरे तेज को धारण करें,

उसका ध्यान करें, ताकि हमारे सब पाप-ताप नष्ट हो जाएँ, आवरण जल जाएँ, मल धुल जाएँ। विक्षेप का संक्षेप होते-होते सर्वथा प्रक्षेप हो जाये।

हे सकल विधाता, करुणानिधान कृपालु दयालु! हम पर ऐसी कृपा और अनुग्रह कर कि, हमें सदा तेरी पवित्र प्रेरणा मिलती रहे, ताकि तेरी उस प्रेरणा से प्रेरित हुए हम सदा तेरी आज्ञा का पालन करते हुए तेरे श्रेष्ठ पुत्र बन सकें, प्रभो! बार-बार तुझसे यही प्रार्थना है। और हे परमेश्वर! आप हमारे हृदय में विराजमान होवें, जिससे कि हम अपने नित्य के सामान्य व्यवहार में भी सत्यनिष्ठ बनें और आपके आनन्द रस का पान करते रहें।

———

(६)

हे पाप-ताप नाशक प्रभो ! मैं तेरी शरण आया हूँ। कृपालु ! मैंने सुना है कि जो अपना आपा तेरे अर्पण कर देता है, उसे तू उत्तम युक्ति से चलाता है, उस जन की रक्षा करता है। और हे महान् रक्षक, बड़ों के भी पालक प्रभो ! तू उत्तम रक्षक जिसकी रक्षा करता है वह कभी कहीं भी पाप नहीं करता और न दुर्गति को प्राप्त होता है। न ही कोई शत्रु उसे दुःख दे सकता है। उसकी सभी पीड़ाओं को तू दूर भगा देता है।

विपत्ति-नाशक ! दुःखों से छूटने तथा तेरी रक्षा का पात्र बनने के लिए मैं तेरे बनाए नियमानुसार चलूं, उसके अनुसार चलते हुए जीवन व्यतीत करूं। और मैं अपना उद्देश्य इसी जन्म में पूरा करूं। यह तभी सम्भव हो सकता है कि, मुझे पाप की उलझन से छुटकारा मिल चुका हो। अतः पिता ! पाप छुड़ा और अपने पास बसा। नाथाधिनाथ ! मैं समझ चुका हूँ तू अत्यन्त बलशाली है, पल में प्रलय कर देता है, जगत् का जीवन तुझ पर ही अवलम्बित है। किसमें सामर्थ्य है कि तेरे गुणों की गणना कर सके। अगणित तेरे गुण और मैं नगण्य करूं गणना। प्रभो ! मुझ में यह सामर्थ्य कहाँ,

तो भी तेरी स्तुति में करता ही हूँ, यही कि तू पालनहार है, सिरजनहार है। हो सकता है अज्ञान के कारण, प्रमाद के वश तेरे आदेश को न सुनूं। या सुनकर न समझूं, उसके अनुसार कार्य न करूं। सम्भव है तेरी उपासना में, तेरे ध्यान में भूल हो जाती हो, हूँ तो अन्ततः अल्पज्ञ ही। अल्पज्ञता से अनेक भूलें होती हैं, बाधायें आती हैं, इसके कारण मैं अनेक बार ठोकर खा चुका हूँ। न जाने अभी कितनी बार और मार खाता हूँ। इससे बचने के लिए मैं तेरी शरण आया हूँ, और तुझे ही अपना माता-पिता, बन्धु-भ्राता और रक्षक समझता हूँ।

मैं तो निपट अज्ञानी हूँ, तेरी महिमा क्या जान पाऊँ। किन्तु सभी सन्त महात्मा, साधक-जिज्ञासु तेरी ही शरण ग्रहण करते हैं, तुझे ही पुकारते हैं। अतः भगवन्! अत्यन्त प्यासे की पुकार सुन, तू न सुनेगा, तो नाथ! कौन सुनेगा। सुन या न सुन, मैं तो अब तेरे द्वार पर आ बैठा हूँ।

———

परम देव परमात्मन् ! मैंने सबको अपना दुःख सुनाया। सुना था कि दूसरों को दुःख सुनाने से दुःख का भार हलका हो जाता है, लघु हो जाता है, घट जाता है, बट जाता है। परन्तु मेरा अनुभव विपरीत निकला। न मेरा दुःख घटा, न बटा, न हलका हुआ। यह उल्टा भारी हो गया, बढ़ गया। ऐसा प्रतीत होता है मेरी करुण कहानी किसी ने सुनी ही नहीं। या वे बधिर होंगे या अश्रुत्कर्ण, नहीं तो वे मेरी सुनते।

दुःख भंजन ! मैंने सुना है कि तू बहरा नहीं है, तेरे कान सुनते हैं, बिना कान के ही तू सुनता है।

मुझे मेरी कामनाएँ तुझसे दूर बहुत दूर ले जा रही हैं, मैं उनसे व्याकुल हो उठा हूँ। कल (चैन) पाने के लिए जो कल (युक्ति) सोची थी वह विकलता कलित करने लगी है।

संसार की ज्वाला-माला से मैं घिर गया हूँ, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहँकार मुझे मार रहे हैं। इनसे मुझे निस्तार नहीं दिखाई देता, किधर जाऊँ, कैसे छुटकारा पाऊँ। अनन्य गतिक होकर तेरी शरण आया हूँ। अतः मेरा सर्वोत्कृष्ट बन्धु बन और मेरा उद्धार कर। सब

बन्धुओं का बन्धन स्वार्थवश, तेरा प्रेम निस्वार्थ। प्रभो! तू सच मान, मैं तुझे, केवल तुझे ही चाहता हूँ।

मुझे पानी के बीच में बैठे हुए भी प्यास सता रही है, हे शुभ शक्ति वाले! मुझे सुखी कर, सुखी कर, अपना अमर आनन्द-रस पिला कर मुझे सुखी कर, तृप्त कर।

संस्सार में कहीं भी रस नहीं है। मुझे तेरे प्यारों ने बताया है, मनुष्य रस प्राप्त करके आनन्दमग्न हो जाता है वह रस मैं कहाँ से पाऊँ? उन्हीं तेरे प्यारों ने बताया है कि वह परमात्मा रसरूप है।

प्राण के प्यारे, प्राण के भी प्राण! तू रस और मैं नीरस। यह क्या शोभा देता है।

सुनो मेरी करुणा भरी कामना, मैं रस पान करने के लिए तेरे साथ रहना चाहता हूँ। प्रभो! रख ले अपने साथ। तेरा कुछ न बिगड़ेगा। परन्तु मेरा सब कुछ संवर जायेगा।

———

हे मार्ग दर्शक, पथ प्रदर्शक! संसार-अरण्य में आकर मैं मार्ग भूल गया। हे परमात्मन्! दुर्गुणनाशक, भद्र-कारक! मुझे ऐसे मार्ग पर चला, जिस पर चलकर मनुष्य सम्पूर्ण द्वेष भावनाओं को त्याग देता है। प्रभो! मैं किसी से द्वेष न करूं, मुझसे भी कोई वैर विरोध न करे, सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करूं और सब मुझसे स्नेह से, प्रीति से, प्यार से व्यवहार करें। भगवन्! सभी दिशाएँ मेरी मित्र हों।

स्नेहमय प्रभो! आप परम दयालु हो, आपकी तो मार में भी प्यार निहित रहता है। कृपासागर! मुझ पर कृपा कीजिए, करुणा की वृष्टि कीजिए। संसार के विषय-विष से तड़प रहे प्राणियों पर अपनी विषापहारी भारी कृपा की वृष्टि कीजिये, ताकि तेरी छत्र छाया में रहते हुए हम सुख से जीवन व्यतीत करें।

प्रभो! वह जीवन, जीवन नहीं, जिसमें तेरी भक्ति न हो। कृपालु! तेरी आराधना के बिना मेरे से कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता।

महात्मा जन तुझे दुष्पार कहते हैं, किन्तु मेरी विनती है कि तू सुपार बन जा और मुझे पार लगादे।

प्रभो ! मुझे पक्का आस्तिक, अपना पूरा अटल विश्वासी बना। और कृपा करके तू मुझ पर ऐसी कृपा दृष्टि कर, जैसे नेता अपने अनुयायियों पर, गुरु अपने शिष्यों पर, माता अपने नन्हें शिशु पर करती है। मुझे कोई युक्ति नहीं आती, कोई नीति नहीं आती। तू ही मेरे लिए उत्तम युक्ति और सुन्दर कमनीय नीति है, जिधर तू चलाए, उधर ही जाऊँ, तुझ पूज्य की सुमति तथा कल्याण-सौहार्द में रहूँ, कृपा कर, प्रभो कृपा कर। हे सर्व दुःखों को दूर करने वाले परमेश्वर ! मैं मिट्टी के बने घर के तुल्य, मृत्यु से सदा आक्रान्त, आत्मा को बन्धन में जकड़े हुए, इस देह को अब फिर कभी न प्राप्त करूं तो अच्छा हो। हे सबको सुखी करने हारे दयालु प्रभो ! तू हमें सुखी कर, हम पर दया कर।

हे ज्ञान-विज्ञान की खान, ज्ञानदीप के प्रकाशक, परम प्रकाशमय, अज्ञान-अन्धकार विनाशक, दुर्गुण घातक, सद्गुण प्रापक, ज्ञान-ज्योति द्योतक, धर्म सुशिक्षक, अधर्म निवारक, प्रीति साधक, विद्या के प्रकाशक, सर्वानन्दप्रद, पुरुषार्थ प्रापक, अनुत्साह विदारक, उत्साह सुधारक, सज्जन सुखद प्रभो ! मेरी इच्छा तेरे पास आने की है।

तू मित्रों का रक्षक मित्र है। सखे ! जब तू मेरा सखा है, मेरा मित्र है, तब तेरे पास आने में मुझे प्रतिबन्ध क्यों है। हे मित्र स्नेहागार ! चाहे मैं नासमझ, अज्ञानी हूँ, किन्तु हूँ तेरा मित्र, सखा ! तूने स्वयं ही कहा है, मित्र मित्र की बात कभी नहीं टालता।

तो हे मित्र ! मैं कह तो रहा हूँ कि तेरे पास आना चाहता हूँ, तुझे प्राप्त करना चाहता हूँ, तुझे प्रत्यक्ष से देखना चाहता हूँ। तू केवल मेरा सखा ही नहीं है बल्कि सबको आश्रय देने हारा तू ही मेरा पिता है और तू ही मेरी माता है, मैं तेरी मंगलमयी कृपा दृष्टि की कामना करता हूँ।

पिता ! क्या पुत्र को पिता के पास आने का अधिकार नहीं रहा। मातुश्री ! तेरे स्नेह से क्या मैं वंचित

रहूँगा, क्या तेरी प्रेमसनी गोदी में पुनः स्थान न पा सकूंगा। माँ ! माँ में तो अथाह ममता होती है, पिता तो पुत्र वत्सल होता है। पिता पुत्र के लिए जैसे सुगम्य सरलता से प्रापणीय होता है वैसे ही तू मेरे लिए हो और मेरा कल्याण कर, मुझे इन जन्म-मरण के दुखों से छुड़ा।

पिता माता ! तुम से बढ़कर मेरा कौन हितकारी है। भगवन् ! मनुष्य-मनुष्य में द्वेषाग्नि प्रदीप्त हो रही है। समाज के शत्रु अधर्म अपना कर निज धर्म से च्युत होकर संसार पर हिंसा के अंगार बरसा रहे हैं। उनकी इस प्रतिकूल भावना को भगवन् भस्म कर दे। हे परमात्मन् ! कोई किसी का अमंगल चाहने वाला न रहे, सभी सब के हितसाधक हों।

हे परमात्मन् ! मैं आपकी मित्रता में प्रतिदिन आनन्द प्राप्त करता रहूँ। अनेक यातनाएँ तथा बुरी वृत्तियाँ मुझे सताया करती हैं। उन बन्धनों को तोड़ कर उन्हें दूर करके मुझे प्राप्त होइये, मुझे मोक्ष प्रदान कर मेरा उद्धार कीजिये।

हे भगवन् ! सर्व विघ्न विनाशक ! तेरी जय हो। हे प्रभो ! मेरे अन्दर की कोई भी चीज तेरे कार्य में बाधा न दे। कोई भी चीज तेरी अभिव्यक्ति में विलम्ब न कराये। एकमात्र तेरी ही इच्छा कार्यान्वित हो, प्रत्येक वस्तु में प्रत्येक मुहूर्त में। हम इसलिये तेरे सामने उपस्थित हैं कि तेरी ही इच्छा पूर्ण हो हमारे अन्दर, हमारी सत्ता के सभी अंगों में, क्रियाओं में, ऊँचे से ऊँचे शिखर से ले कर हमारे शरीर के छोटे अणु-परमाणुओं तक के अन्दर। हे नाथ ! ऐसी कृपा कर कि तेरे प्रति हमारी निष्ठा सर्वाङ्गीण हो, चिन्तन हो। हम सम्पूर्ण रहना चाहते हैं तेरे ही प्रभाव के अन्दर, अन्य सभी प्रभावों से अलग होकर। ऐसी कृपा कर कि हम तेरे प्रति हार्दिक और तीव्र भाव से कृतज्ञ होना कभी न भूलें। तू जो सब अद्‌भुत अमूल्य वस्तुएँ हमें प्रति क्षण प्रदान कर रहा है उन सब में से किसी का भी हम कभी दुरुपयोग न करें।

हमारे अन्दर की प्रत्येक चीज तेरे कार्य में भाग ले, प्रत्येक चीज तेरी सिद्धि के लिए प्रस्तुत हो जाय।

हे प्रभु वर ! तेरी जय हो, समस्त सिद्धियों के परम साधक ! तेरी जय हो। तू अपने में हमें विश्वास प्रदान कर। ज्वलन्त, सक्रिय, चरम और अटल विश्वास प्रदान कर और सकल अज्ञान से मुक्त कर।

हे प्रभो ! अनन्त जन्मों से चली आने वाली इस अपनी दयनीय स्थिति से अब तो मैं काँप उठा हूँ। अपने इन घिनौने देहों से, इन क्षुद्र संकल्पों से, आशाओं के इन निरर्थक पसारों से मुझे बड़ी ही घृणा हो गई है। इसलिए लाचार होकर आपसे एक विनय करता हूँ कि अब अनन्य-शरण मुझको अपने पास आने की अनुमति दीजिए।

हे जगदीश्वर ! आपको न दीखने देने वाली, आप से मुझको अलग रखने वाली जो 'मैं' की मैली ओढ़नी मैंने वृथा ही ओढ़ रक्खी है कृपा करके अपने सांख्य व योग नाम के हाथों से उसे मेरे ऊपर से उतार कर फाड़ डालिये। और जो मैं अनादिकाल से एक नहीं, दो नहीं, ऊपर तले पाँच वेष्टनों में लिपट कर, सुकड़ कर, घुटकर दुःखों की मार से मुर्झा कर, दुबक कर सबसे पीछे जा बैठा हूँ, आत्म-ज्ञान हो जाने पर जो एक ठंडा श्वास आया करता है उसे ले लेने दीजिये। और बस !

भगवन् ! तेरी चेतना के लिए, तेरे दर्शनों के लिए मैं प्यासा हूँ। मैं प्यासा हूँ तेरे सर्वाङ्गीण मिलन के लिये।

हे प्रभो ! तेरे वियोग-क्षण मुझे शत्रुओं के बाणों की भांति लगते हैं, तुम्हारे वरद्-हस्त कब इन बाणों को मेरे शरीर से दूर करेंगे।

आनन्द-प्रदाता, दुःख-हर्ता, दीन बन्धु, कृपा-सिन्धु, दयालु भगवन् ! हम आपके श्री-चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं। भगवन् ! हम इस आवागमन के चक्र में पड़े हुए इन संसारी दुःखों से घानी में पड़े तिलों की भांति पिस रहे हैं। नाथ ! इन दुःखों से हम तंग आ गए हैं, कृपा करके इन दुःखों से हमारा पिंड छुड़वाइये।

प्रभो ! हम आपके बालक-बालिकाएँ सब हाथ जोड़ कर आपके श्रीचरणों में प्रार्थना करते हैं कि जिस उद्देश्य को लेकर हमने आपकी ओर आने के लिए पग उठाया है उसमें आप अपनी सहायता देकर हमें सफलता प्रदान करें, आपकी कृपा के बिना यह असम्भव है।

हे परमात्मन् ! इस मार्ग में चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ, कितनी ही रुकावटें, कितनी ही विघ्न-बाधाएँ आवें, उनसे हमारे मन में यत्किंचित् भी, उत्साह की कमी न हो, किन्तु सबको शाँतिपूर्वक सहन करते हुए यह समझें कि यही तो परीक्षा का समय है और अधिक श्रद्धा और उमंग के साथ आगे ही आगे बढ़ते रहें।

पिता ! हमें ज्ञात है कि जिस किसी ने भी आप की शरण ली, जो भी आपकी प्राप्ति के लिए साधन में लगा, उसको आपने अवश्य अपनी आनन्दमयी गोदी में

बिठाया। मगर नाथ! हम क्या करें, हमारा मन इतना चंचल है कि बहुत समझाने-बुझाने, बहुत यत्न करने पर भी अपनी चंचलता को नहीं छोड़ना चाहता। अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी जब सफलता दिखाई नहीं देती, तब आपको पुकारने के सिवाय और कोई सहारा ही दिखाई नहीं देता। इस कारण आपके द्वार पर आ बैठे हैं। हे परमेश्वर! हमारे सन्मुख प्रकट हो, हमें दर्शन दो। आप सब विघ्नों को दूर करते हैं। केवल भोग करने हारे विषय-लोलुप देह बन्धन को नाश करो और सुख-दुःख, शीतोष्ण, जन्म मरण, इस लोक और परलोक के चाहने हारे इस अन्तःकरण को दूर करो।

———

(१२)

भगवन् ! आपने मुझ पर कितनी कृपा की है, इसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। जब जिस वस्तु की आवश्यकता मेरे कल्याण के लिये हुई, तभी वह वस्तु कहीं से मुझे आ मिली। आप कल्याणकारिणी माता अपने पुत्रों की एक-एक आवश्यकता को अच्छी प्रकार जानती हुई कृपा-पूर्वक पूर्ण करती रहती हैं, ओह ! धन्य हो। आपकी करुणा अपार है आपकी दया का कौन पार पा सकता है।

प्रभो ! आप ही एकमात्र हमारे रक्षक हैं। अनेक योनियों में दुःख भोगने के बाद अब हम समझे कि आप ही एकमात्र हमारे सहायक हैं। इसलिये और सब का सहारा छोड़कर एक आपका सहारा पकड़ा है। हमारे एकमात्र रक्षक ! आप हमसे एक क्षण के लिये भी दूर मत होइये। यदि क्षण भर के लिये भी हम आपको भूल जाते हैं तो नाना प्रकार की चिन्ताएँ हमें व्याकुल कर देती हैं। इसलिये हमारी यही याचना है, यही विनय है कि आप कभी भी हमारी आँखों से ओझल न हों।

पिता ! आपकी हमारे ऊपर जितनी महान् कृपा और दया है, जितना आपका उपकार है, उसका बदला हम किसी प्रकार भी नहीं दे सकते। हम तो केवल आप को बार-बार नमस्कार ही करते हैं।

भगवन् ! आप अपने शरणागतों के सब अनर्थों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को नष्ट करने वाले हैं, इस कारण आप हमारी छिपी हुई वासनाओं को भी, जिनका हमें ज्ञान तक नहीं है, मूल सहित नष्ट कर दीजिये। कृपया ऐसा अनुग्रह कीजिए कि हम इस जन्म में ही आपका साक्षात्कार करके, इन जन्म-मरण के दुःखों से छूट कर आपकी आनन्दमयी गोद में आ बैठें।

प्रभो ! हम कितने दिनों से आपको पुकार रहे हैं, हमारी पुकार की सुनाई कब होगी। लोग तो हमारा मखौल करते हैं, हमें पागल और निकम्मा समझते हैं, परन्तु हम तो आपकी शरण में आ पड़े हैं, आपको ही हमारी लाज बचानी होगी।

यह हृदय बहुत सी निराशाओं के आघातों से घायल हो चुका है, आज तो प्रभो ! उन बुरे दिनों का अन्त कर दीजिये, अपने इन भोले भाले बालकों की शुभ आकांक्षा को पूरा कीजिये, जिससे इन घावों की सब व्यथा तुरन्त ही मिट जाय।

पुकार मचाते-मचाते अब बहुत दिन हो चुके आप की शरण में पड़े हम बहुत चिल्ला चुके, अपने इन पागलों का आज तो शुभ दिन कर दीजिये, इन्हें अपनी शरण में स्थान दे दीजिये, अपना दर्शन देकर कृतार्थ कर दीजिये।

———

प्रभो ! हम अपने कल्याण के लिए जिन नियमों का पालन करना चाहते हैं नाथ ! स्वयं ही ग्रहण करके हम उन नियमों को तोड़ देते हैं। उन नियमों के भंग हो जाने पर हमें दुःख भी होता है, अपने किसी निश्चय के टूट जाने का हमें पश्चात्ताप भी होता है। बार-बार सोचते हैं कि, यदि हम अपने किये संकल्पों को तोड़ते रहेंगे तो हमारा उद्धार ही कैसे होगा। कभी-कभी तो इतना दुःख होता है कि हम निराश हो जाते हैं, समझने लगते हैं कि हमारा उद्धार हो ही नहीं सकता।

प्रभो ! आपसे कर जोड़ प्रार्थना है कि, हमारा मन इतना बलवान् बना दीजिए कि अपने किये हुए किसी भी निश्चय का हम भंग न करें। और ऐसे समय में हमारे मन में यह भाव जागृत करायें कि आखिर हम आप के बालक हैं, आपके निर्बल और ना समझ बालक हैं, फिर हमें घबराने और निराश होने की क्या ज़रूरत है। आनन्दमयी माता अपने पुत्रों को जो उनकी गोदी में जाने के लिये छटपटा रहे हैं अवश्य उठा कर छाती से लगायेगी, ज़रूर लगायेगी और अमृतरूपी दूध पिलायेगी। यह भाव ही हमें निराश होने से बचायेगा।

भगवन् ! हम आपसे क्या माँगें, हमारी आवश्यक-

ताओं को समझना और उन्हें पूरी करना आप स्वयं ही जानते हैं और स्वयं ही पूरी करते हैं और कर रहे हैं।

हे परमात्मन्! हमने अच्छी तरह समझ लिया है कि इस संसार में आपके सिवाय और कहीं तनिक भी सुख नहीं है, आपके सिवाय इस संसार में और कोई सुख देने वाला, दे सकने वाला भी नहीं है। हमने संसार की एक-एक वस्तु को एक-एक विषय को परख कर अच्छी तरह देख लिया है कि इनमें तो कहीं भी सुख नहीं है। इसी कारण से ही प्राचीन ऋषि मुनियों ने आपको ही बार-बार पुकारा है, आपकी ही शरण ली है। इसलिए प्रभो! आपको छोड़ कर हम भला और कहाँ जाएँ। हम तो बस आपके होकर शान्त होना चाहते हैं, और आज से आपके हो गये हैं, पूरी तरह आपके हो गए हैं।

भगवन्! आपके इस संसार में खाने पीने तथा इन्द्रियों के अन्य भोग प्राप्त करने में मनुष्य बड़ा आनन्द मानते हैं और वे इसीलिए जीते हैं, परन्तु नाथ! हम तो इस जगत् में पड़े हुए अपने आपको कैदी की भाँति महान् आपत्ति में फंसे हुए पाते हैं। ये संसार के भोग हमें सुखदायी नहीं लगते, ये हमें सब प्रकार से क्लेशरूप ही दिखाई देते हैं, हमें फंसाने वाले, गला घोटने वाले, बन्धन में बाँधने वाले दिखाई देते हैं। इन भोगों भी को

भोगने के लिए ही आत्मा शरीरों को धारण करता है और शरीर को पाकर आत्मा सर्वथा बँध जाता है और बँध गया है।

प्रभो ! हम तो इस बन्धन से घबरा गए हैं। हम तो इन बन्धनों को तोड़ कर उड़ना सा चाहते हैं, पर यह बन्धन आसानी से टूटने वाले नहीं हैं। हमारे वश की यह बात नहीं है, आप ही कृपा करके इन बन्धनों से हमें मुक्त करें। हम तो सिवाय आपके श्रीचरणों में अपने को छोड़ देने के और कर ही क्या सकते हैं? बस, अब आप ही कृपा करें और अमृत रस का पान करायें।

और हे हृदय-मन्दिर के नाथ ! इस मन्दिर को छोड़ कर अब कहीं न जाएँ।

हे परमात्मन् ! यह वाणी हमें आपके नाम उच्चारण के लिए ही मिली हैं। हमारी यही विनय है कि हम आपके पवित्र नामों का उच्चारण करते रहें। आपकी दी हुई इस वाणी से अन्य कुछ न करें, कोई भी निरर्थक बात कोई भी ऐसी बात जिसमें आपकी चर्चा न हो, वह हमारे मुख से न निकले। हमारे एक-एक कथन में आपकी ही धुन हो। आपका पवित्र नाम जपते हुए, आपका ध्यान करते हुए ही इस काम क्रोधादि शत्रुओं पर विजयी हो सकते हैं। आपके नाम-स्मरण, भजन-ध्यान आदि से ही अनेक महात्माओं ने इन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके सुख शान्ति का अमृत चखा है। प्रभो ! हमारे ऊपर भी अब कृपा दृष्टि होनी चाहिए।

आप सर्वशक्तिमान् हैं। आप को ही पुकारना, आप का ही आश्रय ग्रहण करना शुभ फल देने वाला है, और किसी को पुकारना, दूसरे किसी का आश्रय लेना निष्फल है। पुकारते हुए आप भक्तजनों के संकट एक क्षण में ही दूर कर देते हैं, इसलिये सन्त लोग सदा से आपको ही पुकारते रहे हैं, आपकी ही याद करते रहे हैं।

भगवन् ! आपको छोड़ कर मनुष्य और किसे पुकारे और किसकी शरण ले ? इसलिए प्रभो ! हम भी आपकी ही

पुकार मचा रहे हैं। आप हमारे लिये कल्याणकारी होते हुए हमारी पुकार सुनिये, और हमें दर्शन दीजिए। हम निश्चय से जानते हैं कि आपका पवित्र नाम जपते हुए हम इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाते चले जावेंगे। बस, हमारी यही प्रार्थना है, यही याचना है, यही विनय है कि आप सदैव हमारे साथ रहें, किसी समय भी आपकी विस्मृति हमें न हो। प्रभो ! अब हमें चाहिए मृत्युरहित जीवन, अमर जीवन। यह कीर्त्ति तो नाशवान है, अनित्य है, अतः इस कीर्त्ति के चक्र में हम न पड़े रहें, हमारी कामना इससे बहुत बड़ी है। वह हमारी हार्दिक भावना यह है कि हम आपका प्रत्यक्ष दर्शन करें, इन जन्म मरण के दुःखों से छुटकारा पाएँ।

करुणामय भगवन् ! हमें उठाने के लिए अपने वात्सल्यमय बाहु बढ़ाइये, जिससे कि हम आपकी गोद में आ बैठें, वह गोद जिसमें बैठकर कोई क्लेश नहीं, कोई श्रम नहीं, कोई भय नहीं।

हमारा कल्याण किसमें है यह भी हम अबोध क्या जानें, जो हमें अकल्याण दिखाई देता है, पीछे पता लगता है कि उसी में कल्याण था। पिता ! आप ही जानते हैं कि हम अबोध बालकों का कल्याण किसमें है। बस,

आप हम सब के कल्याण के लिये हम अपने बच्चों का पालन पोषण कीजिये। हम आपके बच्चे हैं, हम आपके ना समझ बच्चे हैं। प्रभो! अब तो अमृत का प्याला पिलाइये और हमें इस बन्धन से छुड़ाइये।

भगवन्! जब कभी हम आपको भूल जायें और विषय वासना में डूबने लगें, तब हे देव! एक बार चेतावनी देकर हमें सावधान कर दीजिये, मोह निद्रा से जगा दीजिये।

हे परम पिता! जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकने वाला है ही नहीं, हमारा दुःखड़ा सुन सकने वाला है ही नहीं, तब नाथ! हम और कहाँ जावें। इसलिए अब शीघ्र अपना अमृत रस का खजाना खोल, हम तेरे प्रेमजल के बिना सर्वथा मरुस्थल हो गये हैं, तू हम पर बरस, खूब बरस।

———

प्रभो ! आपकी शरण में आकर आपसे क्या-क्या माँगें। अतः हम तो केवल यही माँगते हैं कि हमें आपके प्रेमी भक्तों का संग सर्वदा मिलता रहे, जिस से आपके भजन में श्रद्धा और प्रेम बढ़ता रहे, यही हमारे लिये कल्याणकारी है। भगवन् ! आप अग्नि आदि तेजों के भी तेज हैं, आप हमारी वासनाओं, इच्छाओं, आसक्तियों को जला डालिये, जला डालिये, हमारे अज्ञानरूप अंधकार को नष्ट कीजिये, नष्ट कीजिये। हे नाथ सब विश्व का कल्याण हो, दुष्ट लोग अपनी कुटिलता छोड़कर शान्त हों, सब प्राणी अपनी बुद्धि से एक दूसरे का हित चिन्तन करते रहें, हमारा मन शुभ मार्ग में प्रवृत्त हो, निष्काम भाव से प्रेम और श्रद्धापूर्वक आपके भजन ध्यान में लगा रहे।

हे प्रभो ! आप हमें अपनी भक्ति प्रदान करें और शीघ्र अपना दर्शन दें और इस दुःखमय संसार सागर से पार उतार दें। इस संसार सागर से पार उतार देने में आपको कोई प्रयास भी तो नहीं है, केवल आपकी कृपा दृष्टि से ही हमारा उद्धार हो सकता है। दीन जनों के परम हितैषी प्रभो ! भूले भटके, भोले भाले जन ही तो महान् पुरुषों के विशेष अनुग्रह पात्र होते हैं।

प्रभो ! भक्तों का कल्याण करने में आप कभी आलस्य

नहीं करते, आपके श्रीचरणों में हमारा बार-बार प्रणाम हो। आपकी शक्ति अनन्त है, आपही कृपा करके इस जन्म-मरण के चक्र से हमारा पिंड छुड़ावें। आपके लिए इसमें कौन सी कठिनाई है। जो काम अत्यन्त कठिन हो, उसे आप सहज ही कर सकते हैं।

आप ही एकमात्र स्तुति करने योग्य हैं। भगवन्! हम हैं ही क्या चीज। आपको यह समझ कर कि ये मेरे आधीन हैं, मेरी शरण में आये हैं, हम पर विशेष कृपा करनी चाहिए।

आप सब जगत के और जीवों के पिता हैं, अधीश्वर हैं तो आप ही बतलाइये कि प्रभो! क्या हम आपके पुत्र नहीं हैं। जब बालक माता के पेट में रहता है तब अज्ञान-वश अपने हाथ पैर चलाता है परन्तु क्या माता उसे अपराध समझती है। इसी प्रकार आप हम अबोध बालकों का जो अपराध हो, उसे क्षमा करके हम पर कृपा करें।

आप हृदय के अज्ञान को दूर करने के लिए सूर्य और चन्द्रमा दोनों के समान हैं। आप सब के अन्तर्यामी और नियन्ता हैं। हम आपके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं कि हमारे हृदय में किसी कामना का बीज ही अंकुरित न हो, और हमारा मन सदा आपके आनन्द रस का पान करता रहे, सदा उसी रस में डूबा रहे।

———

और याचना करते हैं

(१६)

सर्वशक्तिमान् प्रभो ! हम अशक्त, पद-पद पर गिरने वाले असमर्थ, शक्ति-याचना के लिए और कहाँ जाएँ, सिवय आपके शक्ति प्राप्ति की आशा और किससे लगायें। दीनबन्धु ! कृपासिन्धु ! संसार के समस्त पदार्थ तो देख लिए, किसी में भी एकरस और स्थायी आनन्द नहीं है इसलिए हम चाहते हैं कि अब आपकी शरण में रहने लगें। आपकी शरण में रह कर मनुष्य किसी भी देश और किसी भी काल में दुःख नहीं पा सकता। संसार में किसी भी वस्तु का आश्रय ऐसा नहीं है। आपको पाकर, आपका दर्शन कर, दूसरे सब धन बेकार हो जाते हैं क्योंकि सर्व धनों के धन आप हैं और आप अद्भुत मित्र हैं, ऐसा मित्र और कौन हो सकता है ? यदि सर्वशक्तिमान् और तीनों कालों का ज्ञाता और आनन्द का भंडार मित्र किसी को मिल जाय, तो उसे और क्या चाहिए ? इसलिए हम आपकी मैत्री में आना चाहते हैं अतः हे स्वामी ! आप हमें अपनी मैत्री प्रदान करें, अपनी शरण में हमें ले लें, तब हमें कोई डर, कोई भय नहीं रहेगा, हम निर्भय हो जावेंगे।

प्रभो ! हम आपसे किस बात की याचना करें, प्रार्थना करें, आप तो हमारा अकल्याण कभी नहीं करेंगे,

आप तो जो कुछ भी करेंगे उसमें हमारा कल्याण ही होगा, यह निश्चित है। आपसे प्रार्थना तो केवल इसलिए करते हैं कि इस द्वारा हम आपके कुछ और समीप हो जाएँ, हमारा मन शुद्ध हो जाए। इसीलिए आपके श्री-चरणों में बार बार उपस्थित होकर प्रार्थना याचना करने की इच्छा बनी रहती है।

हे परम ईश्वर! आपको अपना सखा जान कर अब इस संसार में किसी से क्या डर, आपका सहारा पकड़कर अब कैसा भय? जब आपसे नाता जोड़ लिया, जब आपकी शरण में आ पड़े, तब दुःख, कष्ट और जग हंसाई आदि को सह लेने में कौनसी बड़ी बात है। आप महाबली के भरोसे भारी से भारी विघ्न बाधाओं से न घबराते हुए हम आगे ही आगे बढ़ते रहेंगे, यह हमें पूरा विश्वास है। हाँ, यह बात अवश्य है कि यह कार्य आपकी सहायता के बिना नहीं हो सकता। अतः आप ही हमारे अन्दर इतनी शक्ति और उत्साह भर दें कि जिससे हम उपरोक्त बातों में सफल हो सकें।

हे परम देव परमात्मन्! सबको सुमार्ग दिखाने वाले, सबके हितकारी प्रभो! हममें अनेक त्रुटियाँ हैं, नाना दोष हैं। हम अनेक दुर्भावनाओं से भरे हुए हैं। इन त्रुटियों, न्यूनताओं, दुर्बलताओं, दुर्विचारों के कारण ही हमारी

उन्नति में देर हो रही है।

हे दुर्बलों के बल, हे करुणासागर, हे दीनों के रक्षक! हमारा इस दुःख-दशा से आप ही उद्धार कर सकते हैं। आप तो अकारण कृपालु हैं हमारा निस्तार करें, हमारा उद्धार करें। प्रभो! आपकी कृपा के बिना यह कैसे होगा, महादानी कृपा कर।



प्रभो ! जिन्होंने आपको अपनाया, जो आपकी छत्र छाया में आ गये, वे तर गये, मौत उनसे डर गई, चिर जीवन के वे अधिकारी हो गए। आप से जो विमुख हैं उनको सुख कहाँ।

दीनदयालु ! करुणा कीजिए, कृपा कीजिए, हम सब को अपनी भक्ति का उत्तम दान दीजिए। हम सब आपके भक्त बनें। आपकी कृपा, आपकी दया का गुण हम कहाँ तक गावें। हम मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं। आपके बिना तो हमें कहीं भी सुख, शान्ति नहीं मिल सकती। सचमुच हे प्रभो ! आप ही हमारे बन्धु हैं, माता पिता रुष्ट हो जाते हैं। रुष्ट होकर कभी-कभी घर से भी निकाल देते हैं। परन्तु धन्य हो परमात्मन् ! आप तो कभी हमसे रूठते ही नहीं, अतः कभी हमारा त्याग भी नहीं करते, सदा हमारे अंग-संग रहते हैं और किसी स्वार्थ के बिना प्रेम करते हैं। आपका प्रेम अनुपम है।

हम अज्ञ हैं, हमें तो अपना भी ज्ञान नहीं है, हे पिता ! क्या हमें आपकी कृपा का कण न मिलेगा ? हे परमात्मन् ! सबके अन्तर आत्मन् ! हमारा क्या लक्ष्य है; हमें कहाँ जाना है इसका पूर्ण ज्ञान आपको ही है। उस मार्ग को भी आप ही जानते हैं। हम तो नासमझ हैं,

हम डरते हैं कि कहीं भटक न जावें। आप ज्ञानस्वरूप हैं, मार्गदर्शक हैं हमें भी मार्ग बतलाइये, आप ही सन्मार्ग पर चलाइये।

स्वामिन्! हमें ज्ञान नहीं कि हम में कौन-कौन सी त्रुटि हैं, कौन-कौन दोष हैं, हमारे अन्तर बाहर को आप जानते हैं। हमारे आचारों विचारों को, हृदय गुफा के अन्धकार-विलीन संस्कारों को आप जानते हैं।

हे हमारे आत्मा के आत्मन्! आप से हमारा कुछ भी छिपा नहीं है। अतः आप ही हमारे दोषों को, हमारी न्यूनताओं को, हमारी कुटिलताओं को हटायें। हे सर्व-रक्षक! बचाइये हमें, हमारी बुराइयों से बचाइये। हम आपकी शरण आये हैं।

हे अशरण-शरण! सबको परम लक्ष्य तक पहुँचाने वाले, हे अविद्या अन्धकार विनाशक, हे दुर्गुण नाशक! हे मोक्ष के दाता, हे सबके उन्नतिसाधक! रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये।

हे प्रभो! आप हमें अति समृद्धि ऐश्वर्य को प्राप्त कराएँ, और मित्र भाव से स्वीकार करें। आप से वियुक्त होकर अरमणीय दुःखदायी देहों में अब हम न जावें। हम बार-बार आपको प्रणाम करते हैं हमें अपना लीजिए, हमारा आपा गंवा दीजिए और हमें अपनी शरण में ले लीजिये।

———

हे परम रक्षक परमेश्वर ! हम आपको रक्षा के लिए पुकारते हैं। इस संसार में बहुत से क्लेश, दुःख हम पर आते हैं बहुत से भय के कारण उपस्थित होते हैं, उस समय में हे परम रक्षक ! हम आपको याद करते हैं। आपके सिवाय क्लेश में हम और किसे पुकारें, क्योंकि हम जानते हैं कि आप ही एकमात्र रक्षक हैं। जब आप रक्षा करना चाहते हों तब सैकड़ों विपत्तियों के बादलों को क्षण भर में उड़ा देते हो, सैकड़ों बन्धन एकदम काट देते हो। जहाँ कोई भी रक्षा का उपाय नजर नहीं आता, अन्तिम नाश ही दिखाई देता है, बच जाने की कोई कल्पना तक नहीं कर सकते, वहाँ पर भी आपके अदृश्य हाथ पहुँचे हुए हमारी रक्षा कर देते हैं।

आपके रक्षा करने वाले हाथ सब जगह और हर समय पहुँचे होते हैं। इसलिए हे प्रभो ! हमें पूरी आशा है कि आप हमें अवश्य अपनी शरण में लेंगे। अतः हम आपको पुकारते जाते हैं। यदि आप नहीं भी रक्षा करते, तो भी हम निराश नहीं होते, क्योंकि हम जानते हैं कि आपकी अरक्षा में भी रक्षा छिपी होती है।

हे देव ! हमें अटल विश्वास है कि आप कल्याण ही करने वाले हैं, आपसे कभी अकल्याण हो ही नहीं

सकता। हम नहीं समझ सकते, कि स्पष्ट दिखाई देने वाली अमुक आपत्ति किस प्रकार कल्याण के रूप में बदल जावेगी, कैसे हमारा विनाश भलाई का लाने वाला होगा। पर अनुभव द्वारा अन्तस्तल पर यह विश्वास निहित है कि आप अपनी प्रत्येक घटना द्वारा हमारा कल्याण ही कर रहे हैं और अन्त में आप हमारी पालना करेंगे, हमें बचा लेंगे, हमारा अत्यन्त विनाश आप कभी भी नहीं होने देंगे। अतः हम आपको ही रक्षा के लिए पुकारते हैं। सदा विलक्षण ढंग से सब का कल्याण करते हुए आप हमारी निश्चित रक्षा करने वाले हो, हमारे कल्याण के लिये अपने रक्षक बाहुओं को प्रत्येक स्थान में फैलाये बैठे हो। आपके सिवाय मनुष्य के लिये कौन स्तुति योग्य है ? मनुष्य और किसकी शरण जावे, इसलिए हम तो तेरी शरण आ पड़े हैं। अब तू विलम्ब न कर शीघ्र दर्शन दे। हे प्रभो ! तू मेघवत् आनन्द रस की वर्षा कर।

———

संसार में पिता ! पुत्र वात्सल्य से प्रेरित होकर क्या नहीं करता ? बन्धु, बन्धु के लिए जी जान से पूरी सहायता करता है। श्रेष्ठ मित्र अपने मित्र के लिए सब कुछ अर्पण करने को उद्यत रहता है। पर हे प्रभो ! आप तो मेरे सब कुछ हो, आपके होते हुए मुझे किसी वस्तु की कमी क्यों रहनी चाहिए, आपसे मेरा जो सम्बन्ध है वह घनिष्ट अटूट सम्बन्ध है उसे मैं किस नाम से पुकारूँ, उस अनुपम सम्बन्ध का वर्णन नहीं हो सकता। मैं संसार की भाषा में कभी आपको पिता, कभी बन्धु, कभी सखा पुकारता हूँ ! पर हे प्यारे, हे मेरी आत्मन् ! इन शब्दों से मेरा आपका वह सम्बन्ध व्यक्त नहीं हो सकता। जब मैं देखता हूँ कि आप मेरे जन्म देने वाले और लगातार पालन पोषण करने वाले हैं, तब मैं अपनी भक्ति और प्रेम को प्रकट करने के लिए आपको पिता-पिता पुकारने लगता हूँ और आपसे पुत्र वात्सल्य पाने के लिए रोने लगता हूँ। जब मुझे आपके घनिष्ठ सम्बन्ध की याद आती है उस अटूट सम्बन्ध की, जो कि मेरा संसार में और किसी से भी नहीं है, तब मैं बन्धु भाव में आपसे बातें करने लगता हूँ। जब देखता हूँ कि मैं भी आपकी तरह चेतन हूँ, आप भले ही मुझसे बहुत बड़े वरेण्य होओ, तब मैं

सखा बनकर आपको वरेण्य सखा नाम से सम्बोधित करता हूँ। प्रभो! तुम मुझे सखा मानो, बन्धु अथवा पुत्र मानो, सब प्रकार मैं तेरा हूँ और तुम मेरे हो।

हे मेरे सर्वस्व! तो तुम मुझ अपने को कैसे छोड़ सकते हो? मैं अपूर्ण अशक्त बालक तेरा हूँ इसलिए मेरी सहायता किए बिना तुम कैसे रह सकते हो? तुम परिपूर्ण हो, तुम्हें सदा मुझे देते रहने के सिवाय और कार्य ही क्या है? बड़ा छोटे को स्वयं ही दिया करता है इसलिए मैं क्या मांगूं? मेरी आवश्यकताओं को समझना और पूरी तरह पूर्ण करना तुम स्वयं जानते हो। बस, मैं तेरा हूँ, और क्या कहूँ, हे मेरे सर्वस्व, हे मेरे सब कुछ मैं तेरा हूँ।

———

हे हृदयेश ! हे मेरे प्यारे प्रभो ! जब तुम्हारी इच्छा हमें जीवित रखने की है तब हमें कोई मार नहीं सकता। यह अन्धा अज्ञानी संसार बहुत बार तेरे भक्तों से द्वेष करने लगता है, और उन्हें सताता है, उन्हें मारना तक चाहता है। भक्त प्रहलाद को मारने की कितनी चेष्टाएँ की गईं। भक्त मीरां की जान लेने के लिए राजा ने कई बार यत्न किया, भक्त दयानन्द को लोगों ने कई बार विष दिया, पर तेरी इच्छा बिना कौन मर सकता है ?

भक्त लोग इस तत्व को जानते हैं अत: वे निश्चिन्त रहते हैं, सदा आनन्दित रहते हैं। मरने से डरने वाला यह संसार, तेरे ईश्वरत्व को न जानने वाला यह संसार यों ही भय, त्रास और मरण-आशंका से मरा जाता है पर भक्त देखते हैं कि जब तक तेरी इच्छा नहीं, तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता। और जब तेरी इच्छा होगी तब तो मरना भी उनके लिए उतना ही आनन्ददायक होगा, जितना कि तेरी इच्छा से जीना आनन्ददायक है। इस ज्ञान के कारण वे भक्त जीवित ही अमर हो जाते हैं, अभिनिवेश के क्लेश से पार हो जाते हैं।

वे संसार की किसी भयंकर से भयंकर घटना से भी न डरते हुए तेरे भजन-ध्यान में मस्त रहते हैं। अपनी

रक्षा या अरक्षा की चिन्ता वे तुझ पर छोड़कर बेफ़िक्र हो जाते हैं, तू तो संभजन करने वालों की रक्षा करने वाला मौजूद ही है, तब उन्हें क्या चिन्ता ? आहा, कैसी बेफ़िक्री और निरापदता की अवस्था है, कैसा अमरता का आनन्द है।

हे सर्वज्ञ सर्वद्रष्टा प्रभो ! क्या तुम्हें मेरी दशा पर तरस नहीं आता ? सन्त लोग मेरे जैसे पर हंस रहे हैं और कह रहे हैं— 'मुझे देखत आवे हांसी, पानी में मीन प्यासी ।'' सचमुच मैं तो पानी के बीच में बैठा हुआ भी प्यास से व्याकुल हो रहा हूँ, तेरे आनन्द सागर में रहता हुआ भी दुःखी हूँ, सन्तप्त हूँ। तुम प्रतिक्षण मेरी एक-एक आवश्यकता को बड़ी सावधानी से ठीक-ठीक पूरा कर रहे हो, तब मुझे अपने में कोई इच्छा या कामना रखने की क्या जरूरत है। पर फिर भी न जाने क्यों मुझे अनेकों तृष्णाएँ लग रही हैं, सैकड़ों कामनाएँ मुझे जला रही हैं।

नाथ ! मैं क्या करूं, इस बुरी दशा से मेरा उद्धार कौन करेगा ? हे उत्तम शक्ति वाले ! मैं इतना अशक्त हो गया हूँ, इतना निर्बल हूँ कि सामने भरे पड़े हुए पानी से भी अपनी प्यास बुझाने में असमर्थ हूँ । मैं जानता हूँ कि मुझे क्या करना चाहिए, किन्तु कमजोरी इतनी है कि मैं उसे कर नहीं सकता ।

हे सच्चिदानन्द स्वरूप ! मैं देखता हूँ कि आत्मा में सचमुच अपरिमित बल है तो भी मैं उस बल को ग्रहण नहीं कर सकता । मैं जानता हूँ कि मेरी आत्मा अमूल्य ज्ञान

रत्नों का भण्डार है पर मैं इस रत्नाकर भण्डार के बीच में बैठा हुआ भी दीन दरिद्र और भिखारी बना हुआ हूँ।

मैं जानता हूँ कि तुम मेरे आनन्दमय प्रभु सर्वदा सर्वत्र हो, सदा मेरे साथ हो, पर फिर भी मैं कभी आनन्द नहीं प्राप्त कर पाता। अरे मैं तो अमृत के सागर में पड़ा हुआ मरा जा रहा हूँ, तेरी अमृतमयी गोदी में बैठा हुआ, स्वयं अमृत तत्व होता हुआ बार-बार मृत्यु के मुख में आ रहा हूँ हे करुणा-सिन्धु, अब तो मुझ पर दया कर दो मुझे इस हीन अवस्था से उबार लो, अब तो मुझे सुखी कर दो।

हे बलशाली! मुझे इतना बल तो दे दो, कि मैं सामने भरे पड़े जल का सेवन कर सकूं, इससे अपनी प्यास शान्त करके सुखी तो हो सकूं।

जिस तूने मुझे इस आनन्द के सागर में रक्खा है वही तू मुझे इसके पीने का सामर्थ्य भी प्रदान कर, जिससे कि मैं अपनी प्यास बुझाकर सुखी हो सकूं। हे प्रभो! मुझे सुखी कर, सुखी कर अब तो अपना आनन्द रस पिलाकर मुझे सुखीकर यह तेरा बालक कब से चिल्ला रहा है, इसे अब तो सुखी कर।

हे त्रिभुवन-पावन प्रभो ! आप अपने स्पर्श से इस जगत् को पवित्रता दे रहे हो। यह सच है कि तुम्हारे बिना यह संसार सर्वथा मलीन है। यह संसार तो स्वभावतः सदा मलिन ही मलिन होता रहता है, गन्दगियाँ फैलाता रहता है, विकृत होता रहता है परन्तु आपकी ही नाना प्रकार की पवित्र करने वाली धाराएँ नाना प्रकार से इस संसार के सब क्षेत्रों से इन मलिनताओं को निरन्तर दूर करती रहती हैं।

हे पवमान ! हे सर्व जगत् को अपने अनवरत प्रवाह से पवित्र करने वाले ! जो मनुष्य आपके स्वरूप की इस पवित्रता को जानते हैं वे अपने आपको भी, अपने हृदय को भी पवित्र करने लग जाते हैं, अपने अन्तःकरण से काम-क्रोधादि विकारों को निकाल कर इसे बड़े यत्न से निर्मल बनाते हैं। जब यह पवित्र हो जाता है तब इस पवित्र अन्तःकरण में आपकी सात्विक धारायें जो आनन्द रस पहुँचाती हैं, हृदय को सदा सरस बनाये रखती हैं। उसका वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता, पवित्र अन्तःकरण वाले भक्तजन ही उसका अनुभव करते हैं।

जिनके हृदय में द्वेष, क्रोध आदि का कूड़ा भरा हुआ है उनके शुष्क हृदय, या जिन्होंने प्रेम शक्ति का

दुरुपयोग कर, विषैले रसों से अपने हृदय को गन्दा कर रखा है उनके मलिन हृदय इस पवित्र आनन्द रस का स्वाद क्या जानें। जब मनोविकारों का वह सूखा या गीला मैल निकल जाता है तभी मनुष्य के हृदय में आपके पवित्र रस का स्पन्दन होना प्रारम्भ होता है और उसमें फिर दिनों दिन सात्विक रस भरता जाता है।

भक्ति भाव के बढ़ने से जब भक्तों के हृदय में आनन्द के हिलोरे शुरू होने लगते हैं तब वे देखने योग्य होते हैं। हे सोम ! तब उनके पवित्र हृदय का आप पवमान के साथ सम्बन्ध जुड़ गया होता है। इस सम्बन्ध, इस सखित्व, इस एकता के कारण ही उनका हृदय सदा आपकी भक्ति के रस के चुआने वाला झरना बन जाता है। हे प्रभो ! यही सम्बन्ध, अपना यही सखित्व हमें प्रदान करो।

हे सोम ! हम आपसे इसी सखित्व की भिक्षा माँगते हैं। हे जगत् को पवित्र करने वाले ! जिस सख्य के हो जाने पर आपकी पवित्रकारक धारायें मनुष्य के हृदय को सदा भक्तिरस से रसमय बनाये रखती हैं उसी सखित्व की भिक्षा हमें प्रदान करो।

हम अपने हृदय को पवित्र करते हुए आपसे यही सखित्व, यही मैत्री भाव, यही प्रेम का सम्बन्ध प्राप्त करना चाहते हैं, वरण करना चाहते हैं, यह वर हमें प्रदान करो।

———

हे नारायण ! तेरी मंगल कामना प्राणी मात्र के लिए अनवरत हो रही है, तुम्हारे आशीर्वाद प्रत्येक जीव के लिए, अपने प्रत्येक पुत्र के लिए एक समान बरस रहे हैं फिर भी जो ये आशीर्वाद हमें लगते नहीं, हम पर अपना असर नहीं करते, इसका कारण यही है कि हम ही अपने आपको उनसे वंचित रख रहे हैं। स्वार्थ, अहंकार, मोह, ममता से हमने अपने आपको ऐसा बांध लिया है, ऐसा जकड़ लिया कि हम तुम्हरे वास्तव में अति निकट होते हुए भी तुमसे इतने दूर हो गए हैं कि हम पर तुम्हारी अशीर्वाद-वर्षा का कुछ भी असर नहीं होता।

हे मेरे प्यारे प्रकाशमय परमेश्वर ! हम में दूरी करने वाला, हमें जुदा रखने वाला यह आवरण अब नहीं सहा जाता, अब तो यह पर्दा फट जाय, यह आवरण हट जाय। और में तू हो जाऊँ, या तू मैं हो जाय, तब फिर मुझ पर बरसाये गए जीवन भर के तेरे सब आशीर्वाद एक क्षण में सफल हो जाएँ, तथा जीवन भर तुम्हारे प्रति की गई मेरी सब प्रार्थनायें एक पल में पूरी हो जायें।

हे प्रभो ! वह दिन कब आवेगा, जब कि मैं तेरे ध्यान में मग्न होकर अपने आपको खो दूँगा। और दूसरी तरफ तुम अपने परम प्यारे पुत्र को अपनी गोद में

आश्रय दे दोगे जब कि मेरी आत्मा अपने परम आत्मा को पा जायेगी, और दूसरे शब्दों में तुम परमात्मा अपने चिर वियुक्त अंग को फिर अंगीकार कर लोगे।

जब कि मेरी यह लघु अग्नि बृहद् अग्नि में जाकर मैं को नष्ट कर देगी। अथवा जब तुम्हारे द्वारा मेरे स्वीकृत हो जाने से 'मैं' जाता रहेगा। तब मेरी कोई प्रार्थना न रहेगी, क्योंकि तब मेरा कोई स्वार्थ व मेरी कोई कामना न रहेंगी, और इसलिए तब तुम्हारा कोई आशीर्वाद भी बाकी न रहेगा, उस मंगल मिलन में तुम्हारे सब आशीर्वाद मूर्तिमन्त सत्य सफल हो जायेंगे।

जीवन भर जो जो मैंने तुमसे भक्तिमय प्रार्थनाएँ की हैं और उनके उत्तर में, उनकी स्वीकृति में तुमसे मैंने जो नाना आशीर्वाद पाए हैं वे सबके सब आशीर्वाद आखिर इसी महान् मंगल मिलन के लिए थे। मेरी सब प्रार्थनाओं की एक इच्छा और तुम्हारे प्रति सभी अशीर्वचनों की एक इच्छा यह मिलन ही थी। तुम्हारी मेरे कल्याण की सब की सब कामनाएँ, सब आशीर्वाद इस आत्म-प्राप्ति में एक दम पूरे हो जाते हैं क्योंकि यही मेरा सबसे बड़ा कल्याण है, कल्याणों का कल्याण है जिसमें सब कल्याण समा जाते हैं। अहो वह मंगल मिलन, वह महान् मंगल मिलन !

———

हे प्रभो ! मैं कितने दिनों से तुम्हें पुकार रहा हूँ, पुकारते पुकारते अब तो बहुत काल बीत गया है मेरी पुकार की सुनाई अब कब होगी। लोग मुझ पर हँसते हैं, मेरी तुम्हारे प्रति व्याकुलता को देखकर मेरा ठट्ठा करते हैं और मुझे पागल समझते हैं। परन्तु मैं तो तुम्हारी शरण में आ चुका हूँ एकमात्र तुमसे ही रक्षा पाने की आशा रखता हुआ निरन्तर प्रार्थना कर रहा हूँ और करता चला जाऊँगा। तुम ही को मेरी लाज बचानी होगी। क्या मैं ऐसे ही पुकार मचाता रहूँगा, और तुम अनसुनी करते जाओगे; नहीं, नहीं, तुम्हें मेरी पुकार अवश्य सुननी होगी।

हे सर्वश्रेष्ठ, हे पाप-निवारक, हे मेरी आत्मन् ! तुम्हें मेरी यह पुकार ज़रूर सुननी होगी। अब तो बहुत काल बीत चुका है, मेरा मन अपनी इस कामना को तुम्हारे आगे कब से धरे बैठा है, क्या इसकी स्वीकृति का समय अब तक नहीं आया है ? अब तो हे नाथ ! इसे पूरी कर दो। आज का दिन खाली न जाए। बहुत बार आशा बंधते-बंधते टूट चुकी है पर आज़ तो निराश न होना पड़े। आज तो इस चिराकाँक्षित अभिलाषा को पूरी कर दो, चिरकाल के व्यथित-व्याकुल को सुखी कर दो, यह हृदय

तुममें अटल श्रद्धा रक्खे। तुममें कामना के पूरी होने का विश्वास रक्खे। बड़े दिनों से साधना कर रहा है। बहुत सी निराशाओं के घावों से घायल हो चुका है पर आशा नहीं छोड़ सकता, श्रद्धा में कमी नहीं ला सकता, तो आज तो इसके दुर्दिनों का अन्त कर दो, इसकी शुभाकांक्षा को मूर्तिमति कर दो, जिससे इसके घावों की सब व्यथा अब एक क्षण में मिट जाय, बस आज जरूर, आज ज़रूर।

पुकार मचाते-मचाते अब तो पर्याप्त दिन हो चुके, तुम्हारी शरण में पड़ा मैं चिल्ला चुका, अपने इस पागल का आज तो सुदिन कर ही दो और इसे अपनी गोदी में उठा लो। प्रभो! अब आपका विरह असह्य हो गया है, अब विलम्ब न करो, शीघ्र गोदी में उठाओ और अमृत रस पिलाओ।

———

हे जगदीश्वर ! मैं चाहता हूँ कि अब तुम्हारी अध्यक्षता में ही जीऊँ। तुम्हारी देख रेख में, तुम्हारी आँखों के नीचे अपना जीवन व्यतीत करूं। मुझे यह सदा अनुभव रहे कि तुम मुझे देख रहे हो। मेरा एक-एक कार्य, मेरी एक-एक चेष्टा, एक-एक हरकत, तुम्हें साक्षी रखकर की गई हो। इस तरह तुम्हारे सम्यक् दर्शन में, तुम्हें देखता हुआ मैं जीवन यात्रा करूं।

सच तो यह है कि जब मैं तुम्हारी ठीक-ठीक अध्यक्षता में अपना जीवन व्यतीत करूंगा, तब मेरा जीवन स्वाभाविकतया चलेगा, सरलता तथा सरसता से युक्त जीवन होगा। अतः हे प्रभो ! मैं इतना ही चाहता हूँ कि मैं कभी तुम्हारे संदर्शन से जुदा न होऊँ।

परन्तु तुम्हारे संदर्शन में जीना आसान काम नहीं है। मैं यह जानता हूँ कि तुम ही मेरे जीवन आधार हो, मेरी शक्ति हो, मेरी आत्मा हो, तो भी मैं निर्बलता वश, तुम्हें भूल रहा हूँ। सांसारिक वायु के थपेड़ों से मेरी सुध बुध ऐसी भूली रहती कि मुझ में तुम्हारी स्मृति नहीं रहती।

इसलिये हे परमात्मन् ! मेरी तो तुमसे यही प्रार्थना है कि तुम मुझे पहले दृढ़ बना दो, मजबूत बना दो, चट्टान सदृश बना दो। हे सर्वशक्ति स्वरूप ! तुम मुझे ऐसा

दृढ़ बना दो कि संसार की घटनाएँ मुझे चलायमान न कर सकें। मैं सदा तुम्हें देखते रहने का यत्न करता हूँ, तुम्हें देखते रहते हुए ही अपने सर्व कर्म करते रहने का यत्न करता हूँ। पर यह बहुत थोड़ी देर चलता है कोई भी सांसारिक खुशी वा कोई दुःख, कोई चिन्ता आने पर वह मेरा ध्यान उधर खिंच जाता है और मैं तेरे उस संदर्शन की सुखमय अवस्था से गिर जाता हूँ।

इसलिए हे प्रभो ! मैं दृढ़ता का भिखारी हुआ हूँ। मैं जानता हूँ कि जब मैं दृढ़ हो जाऊँगा, तथा उस दृढ़ता द्वारा सुख में, दुःख में, संपद् में, विपद् में सदा तुम्हारा संदर्शन करते रहने का अभ्यासी होऊँगा, तो धीरे-धीरे तुम्हारा यह सम्यक् दर्शन मुझ में ऐसा समा जायगा कि फिर मुझसे जुदा न हो सकेगा। और तब मुझे तुम्हारे ध्यान करने की आवश्यकता न रहेगी।

जैसे कि हम दिन भर सूर्य प्रकाश द्वारा ही सब काम करते हैं पर हमें यह याद रखने की आवश्यकता नहीं होती कि हम सूर्य प्रकाश में हैं। वैसे ही, तब मैं बिना यत्न किये तुम्हारे संदर्शन के प्रकाश में चौबीसों घण्टे रहने-सहने और जीवन व्यतीत करने वाला हो जाऊँगा। अतः हे सर्वशक्तिमान् प्रभो ! मुझे ऐसा दृढ़ बना दो कि मैं किसी भी घटना से भयभीत न होऊँ, और तुम्हारे संदर्शन में रहूँ।

———

हे प्रभो ! मैं चाहता हूँ कि मैं एकाग्र होकर तेरा भजन करूं, ध्यान करूं। परन्तु जब मैं ऐसा करने के लिए बैठता हूँ तब कुछ भी शब्द सुनाई पड़ते ही मेरे कान वहाँ दौड़ पड़ते हैं, आँखों के सामने कुछ भी आते ही मैं वहाँ देखने लगता हूँ, कभी कान कुछ सुनने लगते हैं, कभी आँख कुछ देखने लगती हैं। और यदि मैं किसी ऐसे स्थान पर जाकर बैठता हूँ जहाँ शब्द और रूप आ ही न सकें, तब भी मैं देखता हूँ कि मेरा मन अन्दर ही अन्दर कुछ देखता सुनता रहता है। दिन रात की किसी बात बात का स्मरण आते ही मन वहाँ भाग जाता है और वहाँ की बात सोचने लगता है, तब पता लगता है कि मेरा मन कितनी दूर पहुँचा हुआ है।

यदि किसी दिन मन पर चोट लगने वाली कोई बात हो चुकी है तब तो मन बार-बार वहीं पहुँचता है। रोकने का बहुत प्रयत्न करने पर भी क्षण-क्षण में वहीं जा पहुँचता है। मेरे हृदय में जमने वाली वह ज्योति भी, जो वायु रहित स्थान में रक्खे दीपक की शिखा की तरह बिल्कुल ही न हिलती हुई एक रस जलती हुई रहनी चाहिए, वह ज्योति, वह ज्ञान ज्योति भी सदा इधर उधर हिलती रहती है, मनोवृत्तियों की हवा लगते रहने से हिलती

है, तब फिर मैं तेरा ध्यान कैसे कर सकता हूँ, एकाग्रता से तेरा नाम कैसे जपूँ । और, यदि प्रतिदिन कुछ देर भी तेरा भजन-ध्यान न कर सका तो उस दिन जब कि मेरी यह जीवन साधना समाप्त होगी, तुम्हें क्या मुख दिखाऊँगा, तुम्हें क्या उत्तर दूँगा, तुम्हारे सामने किस बात का अभिमान कर सकूँगा ।

यह जीवन, यह सब ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ तुमने मुझे अपने समीप पहुँचने की साधना ही के लिए दी हैं तो उस दिन जब कि तुम यह शरीर वापस लोगे, तब मैं तुम्हें क्या उत्तर दूँगा, क्या मुख दिखाऊँगा ?

हे प्रभो ! शक्ति दो कि मेरी आज्ञा के बिना मेरे ये कान आँख आदि कहीं न जा सकें और यह मन भी हृदय की ज्योति के साथ मिल जाया करे, ज्योति एक रस जगती रहे । ऐसी अवस्था कम से कम दिन में दो बार सन्ध्या उपासना के समय तो हो ही जाया करे, नहीं तो मैं क्या मुख दिखलाने लायक रहूँगा ?

———

हे प्रभो ! मैं तेरे दर्शन पाने के लिये व्याकुल हूँ, तुझसे साक्षात् मिलने के लिये दिन रात प्रतीक्षा में हूँ। इसके लिये यत्न करते हुए बहुत समय हो गया है। ऐसा एक भी साधन नहीं छोड़ा, जो कि तुझसे मिलने वाला प्रसिद्ध हो। अपनी शक्ति अनुसार तपस्या का जीवन भी बिताया। अब कौन सा पाप रह गया है जिससे तुम्हारे चरण दर्शन नहीं हो पाते। मैं तुमसे ही पूछता हूँ, मुझे मालूम नहीं, मुझे ज्ञात होता तो मैं कभी का प्रतिकार कर चुका होता।

हे पाप निवारक ! तुम ही मुझ दर्शन पिपासु को वह मेरा अपराध बताओ, जिससे अप्रसन्न तुम मुझे दर्शन नहीं देते। मनुष्यों में मैं जिन्हें ज्ञानी, भक्त, महात्मा समझता हूँ, उनके पास जाता हूँ और जाकर यही पूछता हूँ कि प्रभु के दर्शन मुझे क्यों नहीं होते। वे सब क्रान्तदर्शी महात्मा गण भी मुझे एक स्वर से यह उत्तर देते हैं कि वे प्रभु ही तुझसे नाराज़ हैं। वे सब सच्चे भक्त जन मुझे यही एक उत्तर देते हैं, तो हे देव ! मैं अब तुम्हारे सिवाय और किससे पूछूँ ? सचमुच अब और किसी से पूछना व्यर्थ है।

हे प्रभो ! या तो मेरा पाप मुझे दिखा दो, अपनी

अप्रसन्नता का कारण बता दो, या मुझे दर्शन दे दो। हे मेरे स्वामी ! जब मुझे अपने पाप का पता न लगेगा, तब मैं उनका प्रतिकार कैसे कर सकूँगा।

मैं तो अब तुझे प्रसन्न करके छोड़ूँगा। अपने पापों को दूर करने के लिए घोर प्रायश्चित करने को तैयार हूँ।

अपने को पूरी तरह पवित्र कर डालने के लिये आज मैं क्या नहीं कर सकूँगा। मैं अब तुझसे मिल जाने के लिए व्याकुल हो उठा हूँ। इसलिए हे अन्तर्यामिन् प्रभो ! मैं तुझसे अपने पापों को, अपनी कमियों को जानना चाहता हूँ। मेरे पापों के सिवाय इस संसार में और कोई कारण नहीं जो कि अब मुझे तुमसे मिलने के लिये रोक सके। अब तो मैं तुझसे मिलने के लिये ही अपनी सारी शक्ति लगा दूँगा और तेरा दर्शन करके ही मुझे चैन मिलेगा, इसलिए प्रभो कृपा कर।

———

आओ, हम अपना सर्वस्व अर्पण करके भी अपने उस सुख स्वरूप प्रभु की पूजा करें, जो कि हमें हमारे आत्म-स्वरूप का देने वाला है, हम अपने आपको ही भूल कर भटक रहे हैं, वह हमें अपने इस आपको (आत्मा को) प्राप्त करा देता है। वही हमें बल भी देता है, अपने को खोकर आत्म-शक्ति हीन हुए हम लोगों को वही अपनी करुणा से शक्ति भी प्रदान करता जाता है और जब हम उस शक्ति के भण्डार को कुछ अनुभव करने लगते हैं तब देखते हैं कि यह सब विश्व उसी के आश्रित है, सब प्राणियों को सब कुछ देने वाला वही है, सब प्राणी उसी के प्रकट शासन में रह रहे हैं, जाने या अनजाने सब उसी का आश्रय ग्रहण कर रहे हैं, उसके परिपूर्ण शासन को कोई उल्लंघन नहीं कर सकता, उसके नियम अटल हैं। संसार में जो बड़ी-बड़ी शक्तियाँ काम करती दिखाई देती हैं वे सब उसी की आज्ञा का पालन कर रही हैं। उसी की प्रेरणा से प्रेरित पृथ्वी, सूर्य, वायु, अग्नि आदि सब देव अपने महान् कार्य ठीक-ठीक चला रहे हैं। ऋषि देखते हैं कि मृत्यु भी उसी के भय से, उसी की आज्ञा से दौड़ती फिर रही है।

देखो, यह राम की चक्की ऐसी चल रही है कि

इसमें सब पिसते जा रहे हैं, मरते जा रहे हैं। इस मृत्यु के विकराल काल चक्र को चलाने वाला इसका शासक भी वही है। सब संसार दुःखित पीड़ित और मौत का मारा हुआ पड़ा है।

मनुष्यो! यदि तुम उसकी इस विकराल भय रूपिणी मृत्यु देवी से घबरा रहे हो, तो यह भी अश्चर्य देखो, कि जब मनुष्य उस प्रभु की शरण में आ जाता है तब यही मृत्यु अमृत बन जाती है। उस प्रभु की मंगलमयी छाया में सन्ताप नहीं रहता, मृत्यु भी मृत्यु नही रहती। आत्म-स्वरूप को देखकर वह हमें क्षण भर में अमर कर देता है।

आओ, हम सब उस आत्म-स्वरूप को देने वाले की शरण में आकर अमर बन जायें, उसी से बल की याचना करें, जिससे कि हम सदा उसी की छत्रछाया में ही सुख से रहने में कृतकृत्य हो जायें।

इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने सब कुछ की हवि चढ़ाकर अपने उस ऐसे सुखरूप देव को प्राप्त करें, निरन्तर उसके ध्यान में ही मग्न रहें।

———

(२९)

हे महान् प्रभो ! हम अल्प शक्ति वाले मनुष्य अपनी तुच्छ कामनाओं को यों ही इतना भारी समझा करते हैं, हम मनुष्यों को जिस समय जो कामना होती है उसे हम इतना अधिक महत्व देते हैं, हम समझते हैं कि यदि हमारी यह कामना पूरी न हुई तो हम मर जायेंगे, और यदि पूरी हो गई तो सदा के लिए उससे निहाल हो जायेंगे, मानों फिर हमें कोई कामना ही न रहेगी।

परन्तु हम अपनी इच्छाओं को इतना महत्व इसी लिये देते हैं कि हम तुम्हारी अनन्त महिमा को अनुभव नहीं करते। हम यह अनुभव करते हैं कि तुम तो जल के अपार समुद्र हो। और हमारी तीव्र से तीव्र प्यास को, जिसके मारे हम मरे जाते हैं, एक लुटिया से बुझा सकते हो। नहीं-नहीं, तुम तृप्ति-कारक जल के बरसाने वाले सब ओर फैले हुए असीम अन्तरिक्ष हो। और तुम हमें अपनी इस अनन्त वृष्टि में से केवल एक बून्द ही देकर तृप्त कर सकते हो, छका सकते हो। तुम्हारे दिव्य-ज्ञानमय वृहदाकाश से बरसने वाले ज्ञान बिन्दुओं में से एक बूंद में ही वह रस है कि हम उस ज्ञान बूंद को ही पाकर तृप्त हो जाते हैं।

हे प्रभो ! मुझे न जाने कितनी कामनायें थीं। मुझे

अपने में न्यूनताएं ही न्यूनताएं दिखाई देती थीं और मैं यह समझता था कि मेरी यह न्यूनताएं पूरा प्रयत्न करने पर भी कई जन्मों में पूरी न होंगी। पर हे पिता! मैं क्या बताऊँ, तेरे ज्ञान-प्रकाशमय दिव्य अन्तरिक्ष से मुझ पर तेरी एक ही बूंद गिरी, उसमें वह रस था कि तेरे शक्ति कण द्वारा मुझ में आत्म-शक्ति जग गई, मुझे स्थिर पोषक रस मिल गया। और पुण्यों द्वारा जिस सुख का अर्जन संसार करना चाहता है वह सुख भी मेरा साथी होगया। इतनी सब वस्तुएं मुझे इकट्ठी मिल गईं। लोगों को सहज ही इस पर विश्वास न होगा पर यह सर्वथा सत्य है।

सचमुच तेरे ज्ञान भंडार का एक ज्ञान कण, तेरी बलराशि का एक अणु इस तुच्छ मनुष्य को तृप्त कर देता है। इसकी जन्म-जन्मान्तरों की भारी से भारी कामनाएं एक क्षण में तेरे एक स्वल्प दान बिन्दु द्वारा पूर्ण हो जाती हैं, केवल हम तेरी महिमा को नहीं जानते।

हे मृत्यु भय से तर जाना चाहने वाले मुमुक्षु ! तू उस एक सर्वव्यापक तत्त्व को देख, जो कि सर्वथा अकाम है, जिसमें किसी प्रकार की कोई कामना नहीं है अतएव जो कभी चलायमान नहीं होता, सदा सर्वथा धीर है, जो कभी न मरेगा, और न कभी पैदा हुआ है, जो स्वयम् ही अपने आधार से सदा विद्यमान है, जिसे कि कभी किसी अन्य ने जन्म नहीं दिया है। जिस सनातन प्रभु की सत्ता किसी अन्य के आश्रित नहीं, अतएव जिसकी अमृत सत्ता कभी खंडित भी नहीं हो सकती, विनाश को नहीं प्राप्त हो सकती और जो आनन्द रस से सर्वथा परिपूर्ण है, जो कि आप्त काम है, अखंड है उसे देख, उस एक तत्त्व को देख, उसे पहिचान, उसे अपने अन्दर खोज।

क्या तू अपने आपको वैसा अजर अमर तत्त्व नहीं देखता, जब तू अपने आपको अमर आत्मा कभी बूढ़ा न होने वाला, एकरस, नित्य, हमेशा एक समान, युवा देख लेगा तभी, केवल तभी तू मृत्यु भय से पार होवेगा।

उस सच्चे आत्मस्वरूप को देख लेने के बाद तू शरीर नहीं रहेगा, तब तू वही वीर अजर अमर तत्त्व हो जायेगा, तब मृत्यु कहाँ रहेगी। तब तो जीने-मरने में कोई भेद नहीं रहता, जीवन-मरण दोनों ही जीवन हो जाते हैं,

एक नये प्रकार का नित्य जीवन हो जाता है। हजारों मृत्युओं के बीच में भी आत्मा अपनी अमरता को घोषित करता है।

परन्तु जब तक उस आत्म स्वरूप का साक्षात् न हो जाय, मनुष्य अपने शरीर से बिल्कुल जुदा अपने आपको अजर अमर चेतन तत्त्व न देख ले, तब तक मृत्यु भय नहीं जा सकता। मृत्यु से निर्भय होने का संसार में अन्य कोई दूसरा उपाय नहीं है।

जब तक मनुष्य ने यह आत्म-स्वरूप न पा लिया हो तब तक वह चाहे जितना विद्वान्, हजारों ग्रन्थों का पढ़ने-पढ़ाने और बनाने वाला हो जाए, उपदेशक हो जाय पर वह उसी तरह मृत्यु का मारा हुआ फिरता है जैसे कि एक च्यूँटी या एक खटमल मरण त्रास से डर कर भागता है।

यदि मृत्यु को जीतना है तो अजर-अमर, अभय-नित्य, अखंड, एक-रस आत्मा को देखो, तब मृत्यु कहाँ है, मरना कैसा, अरेमरना कैसा ?

हे जगदीश्वर ! इस तेरे जगत् में, इस तेरे न्यायपूर्ण सच्चे शासन में रहते हुए मुझे कोई भी भय नहीं होना चाहिये। तू जगत् में सदा कल्याण कर रहा है तो फिर मुझे कभी भी कोई डर क्यों होवे। भय करना नास्तिक होना है, तुझ पर अविश्वास करना है, तुझे भुलाना है, अपने साथ द्रोह करना है। अतः हे मेरे प्यारे कल्याण-स्वरूप स्वामी ! आज से मैं मन की दुर्बलता छोड़ कर अभय होने का व्रत लेता हूँ। मैं अपनी शक्ति भर किसी भी भय के अधीन न होऊं।

हे मेरे प्यारे जगदीश्वर ! इसमें मेरी सहायता करो। भय न छोड़कर तो मैं संसार में कुछ भी नहीं कर सकता, सत्य पथ पर नहीं चल सकता, कभी तेरे दर्शन नहीं पा सकता।

अतः हे प्रभो ! मुझे ऐसा बल दो कि संसार में किसी भी मनुष्य से मुझे भय न हो। न मित्र से भय हो, न अमित्रों द्वारा क्लेश पाने का भय हो। तेरे सामने मित्र अमित्र एक हैं। तेरे सामने मित्रों के अमित्र हो जाने से क्या डरना। और अमित्रों द्वारा भी तू ही मुझ पर विपद् लाता है उससे क्या घबराना। अनिष्ट तो तू मित्र, अमित्र दोनों द्वारा ला सकता है अतः इन दोनों ही द्वारा मुझे इस भय से बचा अर्थात् मुझे ऐसा बल दे कि मेरे लिए अनिष्ट ही कुछ न रहे।

हे कल्याणमय प्रभो ! संसार में अनिष्ट है ही क्या ? तुझे भूल जाने और कल्पना करके दुःखी होने के सिवाय सचमुच संसार में कोई भय या अनिष्ट है ही नहीं। जो कुछ है और जो होगा, वह सब निस्सन्देह शुभ ही है। मेरा निर्बल मन बहुत से घटित ज्ञात परिचित बातों को अनिष्ट मानकर उनसे तो भयभीत रहता ही है पर यह आगे आने वाली बातों से सदा अनिष्ट की आशंका करके भी व्यर्थ ही भय-पीड़ित बना रहता है।

आगे न जाने क्या होगा, मेरे इस कर्म की सिद्धि होगी या नहीं, कहीं इसका परिणाम बुरा न निकले, इस प्रकार का जो भय मुझ में रहता है वह तो बड़ा ही आत्म घातक है। अतः हे मेरे प्यारे अन्तर्यामी प्रभो ! मुझ में अब ऐसा ज्ञान प्रदीप्त करदो, कि मेरे सब भय भाग जायें और मैं तेरे कल्याणकारी स्वरूप को सदा देदीप्यमान देखता हुआ दिन में या रात में, सदा सर्व कालों में, सर्व अवस्थाओं में अभय रहूँ। ऐसा बल दो कि अन्धकार हो या प्रकाश, विपद् हो या संपद्, अनुकूलताएं हों या प्रतिकूलताएं, मैं इन सब दशाओं में सदा निर्भय रह सकूं।

संसार भर में चारों दिशाओं में, किसी भी स्थान पर किसी भी अवस्था में अब कोई वस्तु, कोई परिस्थिति मुझे भय या संकट दे सकने वाली न रहे, सब जगह कल्याण ही कल्याण हो, अभय ही अभय हो।

यह संसार एक रण-स्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी न किसी विजय पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षों में विजय पाने के लिए मनुष्य प्राय: अपने शरीर बल, बुद्धि बल, मित्र बल, सैन्य बल आदि का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूंगा। परन्तु एक समय आता है जबकि मनुष्य इन बाह्य बलों से हार कर, निराश होकर संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूँढने या पुकारने लगता है। ओ३म्, हे राम, हे अल्लाह, हे गाड आदि कहकर किसी न किसी नाम से हे प्रभो! वास्तव में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि संसार की सर्व शक्ति तू ही एक मात्र है, संसार के सब बलवान्, तेरे ही आधार से बलवान् हैं, जब तू चाहता है तब वे बलवान् होते हैं, तेरी जब इच्छा नहीं होती तब किसी बलवान् में शक्ति नहीं रहती।

इसलिये हे जगदीश्वर! तू ही मेरा सच्चा पालक है और तू ही एक मात्र सब आपत्तियों के समय मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना

चाहिये, तेरा ही पुकारना, शोभन है, सुफलदायक है, अन्य किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआ तू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्व शक्तिमान् है। सदा से, जब से सृष्टि चली है, सन्त लोग आड़े समय में तुझे पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं।

हे प्रभो! तुझे छोड़ कर और मनुष्य किसे पुकारे, इसलिए मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूँ। तू मेरे लिये कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूँ कि तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की ज़रूरत नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए, तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

———

भाइयो ! हम अपने परम आत्मा को भूल गये हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि हम स्वयं भी वास्तव में आत्मा रूप हैं इसलिए हम इस संसार की परम तुच्छ धन दौलत, माल-असबाब, पुत्र-स्त्री, शरीर आदि नाशवान् वस्तुओं से तो इतना प्रेम करने लग गये हैं, इनमें इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गये हैं कि हमें इस गन्दी दलदल में से अब ऊपर उठना असम्भव सा हो गया है पर जो हमारा असली स्वामी, सखा और सब कुछ है, परम पवित्र प्रभु है, हमें सब कुछ देने वाला है, उसे हम दिन रात के चौबीसों घण्टों में से कुछ घण्टे भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश में आवें और अपने परम प्यारे प्रभु को अपना लें, वही हम सबका एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखों का देने वाला है, वही एकमात्र है जोकि हम सबका वरणीय है और वही है जोकि अपने परम ज्ञान द्वारा हम सबको सब कुछ दे रहा है। अरे मित्रो ! हम उसे छोड़कर कहाँ प्रेम करने लगे, सचमुच हमने अपनी प्रेम शक्ति का दुरुपयोग किया है। क्या प्रेम जैसी पवित्र वस्तु हमें इन अशुचि, तुच्छ, अनित्य वस्तुओं में करने के लिए दी गई थी। आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लेवें और विश्वपति को प्यारा बना लेवें, अपना प्रेम उसे समर्पण कर देवें।

संसार में जिन द्वारा हमारा जन्म होता है उन्हें हम पिता कहते हैं और भी जो वृद्ध पुरुष, गुरु आदि होते हैं वे भी हमारा उत्कृष्ट पालन करने वाले होने से पिता कहलाते हैं। परन्तु हे प्रभो ! हम सबको कभी न कभी अनुभव हो जाता है कि हमारे वास्तविक पिता तो एक मात्र आप ही हैं।

एक समय आता है कि जब सांसारिक पिता भी रोते खड़े रह जाते हैं और हमारी पालना रक्षा नहीं कर सकते। सचमुच संसार के हम सर्व प्राणी, सांसारिक पिता वा पुत्र सबके सब तेरे एक समान पुत्र हैं।

हे सबके पिता, हे परम पिता ! जब हम सब तेरे पुत्र हैं तो हमारी तेरे तक सदैव पहुँच क्यों नहीं होती ? पुत्र का तो अधिकार है कि जब चाहे पिता के पास पहुँच जावे। जब इस संसार में और कोई हमारी रक्षा कर सकने वाला है ही नहीं, तो हे पिता ! हम और कहाँ जावें ?

तू हमारे लिये सुगमता से प्राप्त होने वाला हो। हे एकमात्र पिता ! हम जिस समय चाहें, जिस जगह चाहें तुझे मिल सकें, अपना दुःख सुना सकें, अपनी बाल-कामनाएँ पूरी करा सकें। हम बच्चों की तुम से यही प्रार्थना है, यही याचना है।

और हमारा कल्याण किसमें है यह भी हम अबोध बालक क्या जानें ? जो हमें अकल्याण दिखाई देता है पीछे पता लगता है कि वही कल्याण था, उसी में हमारा हित था। हे पिता ! तुम ही जानते हो कि हम बच्चों का कल्याण किसमें है। बस तुम ही हमारे कल्याण के लिये हम अपने बच्चों को पालो-पोसो, हम तुम्हारे बच्चे हैं, हम तुम्हारे नासमझ बच्चे हैं।

———

हे प्रभो ! हम चाहते हैं कि हम तेरी शरण में रहने लगें। तेरी शरण ऐसी है कि उसमें आकर मनुष्य किसी भी देश में तथा किसी भी काल में दुःख नहीं पा सकता। संसार की किसी भी वस्तु का आश्रय ऐसा नहीं है और सब आश्रय और सब शरणें इसके सामने अत्यन्त तुच्छ हैं क्योंकि संसार के सब देवों के देव तुम हो, सब देवों में देवत्व तुम्हारे द्वारा ही आया है, तुम्हारे आश्रय बिना इन अग्नि आदि महान् दीखने वाले देवों में कुछ नहीं है। इन सबको शक्ति देने वाले तुम हो, धनों के धन तुम हो, तुम्हें पाकर और सब धन बेकार हो जाते हैं। सब पुण्य यज्ञों के अन्दर तुम ही शोभायमान होते हो, यज्ञों का सौन्दर्य तुम हो, तुम्हारे बिना कोई यज्ञ, यज्ञ नहीं रह सकता और तुम अद्भुत मित्र हो। ओह, ऐसा मित्र और कौन हो सकता है यदि सर्वशक्तिमान् और तीनों कालों का ज्ञाता मित्र किसी को मिल सके तो और क्या चाहिये। इसलिए अब हम तेरे सख्य में, तेरी मैत्री में आना चाहते हैं। हमने तुझे देवों का देव, वसुओं का वसु समझ लिया है अतः हमें अब किसी अन्य देव वा वसु की प्राप्ति की चाहना नहीं रही है। अब हमें तेरे निरन्तर ध्यान का ही यज्ञ सर्वश्रेष्ठ लगता है और हमने तुझे अद्भुत मित्र

देखा है। ऐसे अद्भुत, ऐसे विलक्षण तुम सर्वज्ञ सर्वसमर्थ मित्र की अद्भुत महिमा दूसरे न जानने वाले को कैसे समझायी जावे। और तुम कैसी विलक्षणता से हम सबके साथ आठों पहर, हर घड़ी, हर पल परम मित्रता निभा रहे हो।

तुम ऐसे अद्भुत मित्र को पाकर अब हमें और किसी की मैत्री की जरूरत नहीं है। अर वे अनजान लोग हैं जो संसार में और किसी की मैत्री पाने के लिए टक्करें मारते फिरते हैं।

तेरी विस्तीर्ण शरण में तो और सब शरणें समा जाती हैं अतः हे स्वामी! हमें तू अपनी शरण में लेले, अपनी मैत्री प्रदान कर, तब हमें कोई भय न रह सकेगा।

हे प्रभो! तू हमें अपनी अनन्त अपार शरण में जगह देदे, तब हमें किसी विनाश का भय न रहेगा। और हे करुणासागर! हमारा मन अत्यन्त चंचल है अतएव भक्ति और ज्ञान के लिए अनुपयोगी है। आप ऐसी कृपा करें कि हमारा मन अपनी चंचलता छोड़कर अन्तर्मुख हो आपके अमृतरस का पान करता रहे।

———

हे महान् ऐश्वर्य वाले प्रभो ! हमने तेरा अवलम्बन ग्रहण कर लिया है। हमने देखा कि सब ज्ञानी, भक्त और जिज्ञासु तेरी शरण ग्रहण करते हैं अतः हमने भी अब और सब सहारे छोड़कर एक तेरा ही सहारा लिया है, हम इस जगत् में अपना सर्वव्यवहार, सब काम काज तेरे ही भरोसे करते हैं। और कोई हमें क्या कहेगा, क्या समझेगा, हमें इस मार्ग में क्या-क्या कष्ट उठाने पड़ेंगे, संसार हमारी कितनी निन्दा करेगा, यह सब कुछ हम नहीं सोचते। बस, तेरी इच्छा, तेरी आज्ञा क्या है इसे यथाशक्ति जान कर उसे ही तेरे भरोसे करते जाते हैं।

अतः हे प्रभो ! अब हम तेरे हैं और तू हमारा है, संसार में अब और कोई हमारा नहीं है, हमारे सब सम्बन्धी, हमारे घनिष्ठ से घनिष्ठ मित्र, हमारा धन, हमारी बुद्धि और शरीर आदि किसी का भी हमें भरोसा नहीं है। इनका जितना सहारा है वह सब तेरे द्वारा ही है।

इसलिए हे हमारे स्वामी ! अब हम और किसके आगे प्रार्थना करें, ऐसा संसार में और कौन है जिसके आगे हम सब विनती करेंगे। विनती करके अपने को हीन करेंगे। और किसी के आगे अब हम दीन नहीं बन सकते। इसलिए हे प्रार्थनाओं को सुनने वाले, हे पूजक

की पूजा ग्रहण करने वाले ! हम जो प्रार्थनाएं तेरे चरणों में कर रहे हैं उन्हें तुम स्वीकार करो और हमें अपनी शरण में ले लो, तुम्हारे सिवाय अब और हमारा नहीं है।

हे सर्वरक्षक, सर्वसमर्थ प्रभो ! हम तुम्हें पुकार रहे हैं। आज हम अपने बन्धनों से छुटकारा पाने के लिए पुकार रहे हैं, तुम अपनी रक्षा के साथ आओ, हमारे रक्षक बनो। तुम बेशक महान् हो, हमारी रक्षा के लिये हमें अपनी निकटता का अनुभव कराओ, तुम हमारे निकटतम हो जाओ, आकर हमें अपनाओ। हम तुम्हें न जाने कब से रिझाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज तो हम अपने पवित्र आत्म-बलिदान की भेंट हाथ में लेकर तुम्हें पुकार रहे हैं, क्या हमारे इस सुन्दर आत्म-बलिदान से भी तुम प्रसन्न न होओगे। हमारी इस आत्म आहुति को तो हे प्रभो ! तुम अवश्य स्वीकार करो। अब तो प्रसन्न हो जाओ, और आज हमारे इस बन्धन को काट डालो।

पुकारते-पुकारते बहुत समय हो गया है, अब तो हमारी पुकार सुनो। आओ हे प्रभो ! आओ और हमें बन्धन से छुड़ाओ।

———

हे सम्पूर्ण ऐश्वर्य के स्वामी, हे अतिशय ज्योति वाले, हे सर्वशक्तिमान् ! मैं तुझे एक बार देख कर तेरा हो चुका है, अपना सर्वस्व तुझे सोंप कर तेरा हो चुका हूँ। अब तू ही मेरा अपना है, इस विश्व में अब और कोई मेरा नहीं है तो फिर मैं अपनी प्रार्थना और किसके सामने करूं, अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिए किस अन्य की तरफ देखूं। तुझे पाकर हे महान् ऐश्वर्य वाले, हे सर्वशक्तिमय तुझे अपना कर मेरी शुभ अभिलाषा कैसे अपूर्ण रह सकती है। तू सर्वप्रथम है, तूने बहुत से भक्तों के लिए बहुत कुछ किया है, इस संसार का सब कुछ तूने ही बनाया है, तू एक क्षण में मनुष्य को अपना दर्शन देकर कृतकृत्य कर सकता है।

हे सब विघ्नों और आवरणों को हटाने वाले ! तुम अपने अपरिमित ऐश्वर्य में से उठाकर मेरी इच्छा भर जरा सा ऐश्वर्य मुझे दे दो, मेरी अभिलाषा पूरी कर दो। मेरी अभिलाषा कितनी ही कठिन, कितनी ही असम्भव दीखती हो, पर तुम सब विघ्न-बाधाओं को दूर कर सकते हो। हे सब विघ्नों का विनाश करने वाले तेरे जैसे स्वामी को पा लेने वाले भक्त की अभिलाषा कैसे अपूर्ण रह सकती है।

हे प्रभो ! बाधा हटा कर इसे पूर्ण कर दो, पूर्ण कर

दो, अपने अनन्त ऐश्वर्य में से उठा कर एक मुट्ठी भर ऐश्वर्य मुझे दे दो, यह मेरी इतनी बड़ी भारी अभिलाषा तुम्हारे लिये सचमुच मुट्ठी भर है। हे भगवन्! मैं बुड्ढा हूँ और तुम मेरी लाठी हो, तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, पर मैं सच्चे अर्थों में जीर्ण हूँ, पुराना हूँ। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूँ, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभव के बाद, जीर्ण होकर, पुराना होकर अब समझा कि सब बलों के स्वामी तुम हो, इसलिए और बलों का सहारा छोड़ कर एक तुम्हारा सहारा पकड़ा है।

हे मेरे एक मात्र बल! तुम मुझ से अब एक क्षण के लिए भी दूर मत होओ, यदि क्षण भर के लिए भी मैं तुमको भूल जाता हूँ, अपने मानसिक नेत्रों के सामने से क्षण भर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूँ, तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ, एक दम निस्सहाय हो जाता हूँ, अतः अब तो यही सतत कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ बने रहो।

हे मुझ वृद्ध की लाठी! हे मुझ निर्बल के बल, हे मेरे एकमात्र सहारे! तुम अब सदा मेरे साथ रहो, तुमसे जरा भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता।

———

हे परमात्मन् ! मैंने संसार में बहुत विहार किया, बहुत इच्छाएँ, कामनाएँ कीं, बहुत भटका, परन्तु जब से मेरा मन तेरी ओर आया है, जब से तेरे एक सच्चे भक्त द्वारा, सच्चे गुरु द्वारा तेरे स्वरूप की एक झांकी मुझे मिली है, तब से मेरा मन मुग्ध होकर ठहर गया है। हे दर्शनीय ! तुझे देखकर मैंने सब कुछ पा लिया है। जिस प्यारे परम तत्त्व को न पाने से बड़ी व्याकुलता थी वही पा लिया है। तेरे स्वरूप ने मुझे ऐसा मोहित कर लिया है कि अब मेरा मन हे परम सुन्दर ! तुझसे जरा सी देर को भी दूर रहना नहीं चाहता है। मैं अब अन्य किस वस्तु की कामना करूँ ? मेरी सब इच्छा, कामना, अभिलाषा, मनोरथ सब का एक तू ही आश्रय हो गया है, बस अब एक तेरी ही कामना रह गई है।

हे मेरे हृदय को अन्य सब कामनाओं से शुद्ध कर देने वाले परमेश्वर ! अब तुम मेरे हृदय मन्दिर को अपने इस मुग्ध करने वाले आनन्दमय स्वरूप से परिपूर्ण कर दो। मेरे अन्तःकरण के आसन पर आ विराजो। राजा की तरह मेरे हृदय के सिंहासन पर आरूढ़ हो जाओ।

हे अभीष्ट देव ! तुम मेरे हृदय के शासक, नियन्त्रक राजा, स्वामी हो जाओ। हे समस्त प्रजाओं द्वारा पुकारे

गये प्रभो ! मेरे महा भाग्योदय से जब तुम मुझे एक बार मिल गये हो, तब मैं तुम्हें क्यों गंवा दूँ । अतः अब तुम मुझ में स्थित हो जाओ, आ बैठो ।

हे दर्शनीय ! तुम्हें एक बार देख लेने पर अब मैं तुम्हें आँखों से क्षण भर के लिये भी ओझल करना नहीं चाहता । अतएव कहता हूँ कि मेरे हृदय को अपना निवास-स्थान बनालो ।

हे प्रभो ! तुम अपने निजानन्द-रस के सोम-रस से सदा ही तृप्त हो, मैं तुम्हें अपने हृदय में निमन्त्रित करके क्या सुख दे सकूंगा । परन्तु नहीं, मेरा भक्त मन कहता है कि तुम्हें भी विशुद्ध हुई आत्मा को देखकर सुख मिलता होगा । अतः तुम मेरे हृदय में बैठकर भक्ति रस पान करो।

अपने उच्च सिंहासन से उतर कर मेरे इस तुच्छ पान को ग्रहण करो । मेरा यह कामना-मल से रहित निर्लेप आत्मा तुम्हारा होकर सर्व भाव से तुम्हें समर्पित है, इसे ग्रहण करो, स्वीकार करो, अपना लो ।

———

में माधुर्य प्राप्ति की साधना में लगा हूँ। संसार की प्रत्येक वस्तु के सेवन द्वारा मैं अपने में मधुरता बसाना चाहता हूँ। हे माधुर्य ! तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन में घुल जाओ और मेरे सम्पूर्ण जीवन को मधुमय कर दो। मैं वाणी से मीठा ही बोलूं, मेरी जिह्वा के अग्र भाग में मधु हो और मेरी जीभ के मूल में और भी अधिक मधु भरा हो।

हे मधुमय प्रभो ! माधुर्य को न समझने वाले मनुष्य केवल काम निकालने के लिए भी मधुरता का आश्रय लेते हैं अतः वे ऊपर के व्यवहार में, दिखावट में मधुरता को ले आना काफी समझते हैं। वे अन्दर-अन्दर द्वेष रखते हुए जिह्वा के अग्र भाग में प्रेम और माधुर्य प्रकट करते हैं पर उन्हें मालूम नहीं कि ऐसे धोखे के माधुर्य से तो कटुता ही लाख दर्जे अच्छी है। ऐसे झूठे माधुर्य से वास्तव में कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं हो सकता। वे बेचारे माधुर्य की असली अपार शक्ति को, मैत्री के महा-बल को नहीं समझते। अतः मेरी वाणी से तो जो प्रेममय मधु झरा करता है वह सदा मेरी वाणी के मूल से, मेरे अन्तरतम हृदय से, मेरे प्रेम भरे मानस-स्रोत से आकर झरता है। मेरा एक-एक कर्म भी मधुमय पुष्पों को बरसाता है।

हे माधुर्य ! तुम मेरी प्रत्येक चेष्टा में, प्रत्येक हरकत में, प्रत्येक व्यवहार में ही केवल समाये हुए न होओ, किन्तु मेरे प्रत्येक विचार में, प्रत्येक निश्चय में तुम्हारा वास हो। मेरा रात-दिन का एक-एक संकल्प भी मधुमय हो। हे मधु ! तुम मेरे संपूर्ण अन्तःकरण में ऐसे रम जाओ कि मेरा चित्त प्रदेश उससे अव्याप्त न रहे अर्थात् मेरी एक-एक वासना भी माधुर्य से भरी हो। और मैं अपनी स्मृति वा स्वप्न में भी कभी कोई द्वेष, अमैत्री वा कटुता का स्वप्न तक न देख सकूं। हे मेरे प्रेम व ज्ञान स्वरूप प्रभो ! मैं तुम्हारे मधुरूप का उपासक हुआ हूँ।

स्वाभाविक और उचित मृत्यु वह होती है जिसमें शरीर इस तरह सहज में छूट जाता है जैसे कि पका हुआ फल डाल से टूट पड़ता है, हम चाहते हैं कि हमारी ऐसी मृत्यु हो। पका हुआ फल अपनी अधिक से अधिक पुष्टि को, जो उसे उस वृक्ष से मिल सकती है, पा चुका होता है और पकने पर उसमें एक मनोहर सुगन्ध आ जाती है। तब उसको वृक्ष से जबरदस्ती नहीं जुदा करना होता, वह स्वयमेव आराम से जुदा हो जाता है। हम चाहते हैं कि हमारी इस संसार से जुदाई, हमारी मृत्यु इसी तरह आराम से हो, स्वाभाविकतया हो। इस प्रयोजन के लिए हे भगवन् ! हम तुम्हारी शरण आये हैं। तुम्हारा यतन करते हैं, तुम्हारा यतन करने से हम संसार वृक्ष पर स्वाभाविकतया पकते जायें।

सुन्दर सुगन्धदाता प्रभो ! हम तुम्हारी उपासना करते हैं। तुम्हारी उपासना से जहां हम धीरे-धीरे परिपक्व हो जायेंगे, हम में पूरी पुष्टि आ जायेगी, वहां इसमें परिपक्वता की सुगन्ध वा सुन्दरता भी आजायेगी।

अहा ! इस पकी अवस्था में शरीर को छोड़ना, संसार को छोड़ना भयंकर व दुःखदायी होने की जगह कैसा शान्ति-दायक होगा। लोग मृत्यु से यों ही डरते हैं।

हे मृत्यु के स्वामी ! ऐसे लोग तुमसे भी डरते हैं, तुम्हारे रुद्ररूप से घबराते हैं, पर हे रुद्र ! तुम त्र्यम्बक हो, तीनों लोकों की आँख हो, तीनों अवस्थाओं के अधिद्रष्टा हो। नहीं, यों कहना चाहिए तुम तीनों लोकों की तीनों कालों में अंबा हो, माता हो। तुम उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने वाली माता हो। जो तुम्हारे केवल प्रलय वा संहार रूप को ही देखते हैं वे ही मृत्यु से घबराते हैं, वे तुम्हारे पुष्टिवर्धक सुन्दर रूप को नहीं देखते। अतएव तुम्हारा यजन कर, भजन-ध्यान कर तुमसे रस पाकर अपनी परिपक्वता नहीं कर पाते, इसलिए उन्हें जबरदस्ती संसार से अलग होने से, मृत्यु में बड़ा कष्ट होता है।

हे जगदम्बे ! तुम तो संहार करती हुई भी हमारी माता हो, तुम जब इस लोक से हमें उठाती हो, तो अपनी गोदी में बिठाने के लिए ही उठाती हो। हम तुम्हारे नासमझ बच्चे तुम्हारी अमृतमयी गोद को भी नहीं पहचानते। पर हे माता ! तुम अब हमें ऐसा परिपक्व और सुगन्धियुक्त कर दो कि हम मरते हुए भी तुम्हारी अमृतमयी गोद से कभी जुदा न होवें, और हँसते-हँसते इस संसार को छोड़ें। हे माता ! इस मृत्यु भय से अवश्य हमारा छुटकारा करो, और अपनी अमृतमयी गोद से कभी बिछुड़ने न दो। हे माँ ! अपनी अमृतमयी गोद से कभी बिछुड़ने न दो !

हे प्रभो ! हम तेरे हो जायें, हम चाहते हैं कि हम अपने न रहें तेरे हो जाएं, तेरे होने से हम तर जायेंगे। परन्तु मैं तुझे कैसे ढूँढूँ । हे मेरे आत्मन् ! तू मुझसे ही छिपकर न जाने कहाँ जा बैठा है, किस गहन गुफा में जा छिपा है जैसे कि जब कोई चोर किसी पशु को चुरा ले जाता है और कहीं पहाड़ की गुफा में जा छिपता है, तब पशु वाला अपने पशु को घर न पाकर ढूँढने का प्रयत्न करता है।

कहते हैं कि तू मेरे ही अन्दर मेरे हृदय की किसी गंभीर गुफा में छिपा बैठा है। क्या कभी हे आत्मन् ! तुझे पाकर मैं तृप्त हो सकूंगा।

हम क्या हैं, यह हम नहीं जानते। हम जिसे हम समझते हैं वह तो केवल बहुत सी नाशवान् वस्तुओं का ढेर है फिर भी हम में जो ज्ञान, जो चैतन्य शक्ति है और जो आनन्द दिखाई देता है वह जिस वस्तु के कारण है वही हमारे अन्दर एकमात्र अविनाशी तत्त्व है यह हमारा आत्मा है और यही असली हम हैं। इन हमारे देह-इन्द्रिय आदि भौतिक जड़ वस्तुओं में वही एकमात्र चेतन है, इन अकवियों में वह कवि है, इन अक्रान्त-दर्शियों में वह क्रान्त-दर्शी है, इन बोल न सकने वालों में बोलने की

शक्ति देने वाला है। इन असुन्दर वस्तुओं में वही सुन्दर है, वही इन विनाशशील मरने वाले मर्त्यों में अविनश्वर अमृत तत्त्व है, वही असली हम हैं, आत्मा हैं।

ओह! उसकी उपेक्षा करके जो अब तक हम दिन रात दूसरी जड़ क्षण-भंगुर वस्तुओं की सेवा-सुश्रुषा में लगे रहे हैं, यह हमने कितना अनर्थ किया है।

हे आत्मन्! आज तुझे पहचान कर हम देखते हैं कि इन्द्रिय-मन-प्राण आदि में जो बल, तेज, सामर्थ्य दिखाई देता है वह इनमें नहीं है वह तो सब तुझमें है।

इसलिए हे बल-तेज के भण्डार! हमने बेशक अब तक तुझ अपनी आत्मा को भूलकर बड़ा आत्मघात किया है पर अब हम आत्म घाती विचार न करेंगे।

हमें अब एकमात्र तेरी ही प्रसन्नता चाहिए। यह सब जग बेशक रूठ जाय, पर हम अब तुझे रूठने न देंगे।

हे मेरे अन्दर बैठे आत्मन्! जब तक हमारे प्रति तुम सु-मना हो, चाहे फिर संसार हमारी निन्दा करे, बुरा कहे, हमें कुछ परवाह नहीं। इन सब मर्त्य संसार को छोड़ कर हम केवल तुझे प्रसन्न रक्खेंगे, क्योंकि तू ही सब कुछ है, निश्चय से तू ही सब कुछ है।

— — —

हे जगदीश्वर ! तुम मेरे आत्मा के आत्मा हो, यह जान लेने पर मैं अब दिन रात तुम्हारे से ही सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उद्यत रहता हूँ। हे शूर तुम संसार के रक्षक हो इसलिए मैं भी तुम्हारी रक्षा में आ गया हूँ, तुमसे मेरा सम्बन्ध स्थापित हो गया है परन्तु फिर भी यह संसार-संग्राम बड़ा विकट है। पाप प्रलोभनों की शक्तियां मुझे समय-समय पर अपना भय दिखाती हैं, मुझे संतप्त करती रहती हैं।

उस समय हे प्रभो ! मैं सब सुध-बुध भूल जाता हूँ, तुम्हारी रक्षा-शक्ति सब भूल जाता हूँ। इसलिए मैं तो चाहता हूँ कि तुम मुझमें अब अपना घर कर लो, हमेशा के लिए घर कर लो। अपनी दिव्य सेना के साथ, अपनी सब तेजस्विता के साथ मुझ में अपना घर बना लो।

हे सेना वाले ! मुझमें अपना घर बना लो, तभी यह आसुरी शक्तियाँ मुझे भयभीत न कर सकेंगी, नहीं तो मैं इन भयों और आशंकाओं से ही मरा जा रहा हूँ।

हे प्रभो ! मुझे इस मरने से बचाओ। मैं तुमसे और कुछ नहीं चाहता, और कुछ आकांक्षा नहीं करता, बस मुझमें अपना घर बना लो। हे सर्वशक्तिशाली ! तुम इस सब संसार का धारण पोषण कर रहे हो, तुम मुझे

अब विनष्ट मत होने दो, मुझमें अपना घर बनाओ और मेरी रक्षा करो।

हे प्रभो! उस समय की प्रतीक्षा में हैं जब हम अपने आपको समर्पित कर देंगे, तुझे दे देंगे। कब हे भगवन्! सचमुच तेरे लिए अपनी भेंट चढ़ा सकेंगे, वह समय कब आवेगा? अपने आपको तुझे दे देने के लिए हम आतुर हो रहे हैं। मेरे संपूर्ण ज्ञान, मेरे संपूर्ण ध्यान, मेरे संपूर्ण संकल्प तेरी प्राप्ति के लिए उठ रहे हैं। दिन रात की मेरी संपूर्ण वृत्तियाँ पंख फैलाए तेरी ही तरफ उड़ रही हैं। मेरे मन की संपूर्ण गतियां तेरी ही प्राप्ति के उद्देश्य से हो रही हैं। मैं अपने संपूर्ण अन्तःकरण से निरन्तर तुझे ही याद कर रहा हूँ। फिर भी न जाने क्यों तू मेरी सब पुकारों को अनसुनी कर रहा है। मैं दर्शन पाने के लिए पुकार रहा हूँ, न जाने कब से पुकार रहा हूँ। हे प्रभो! अब तो मेरी पुकारों को सुनलो, इन्हें सफल कर दो।

———

मैंने अपने अन्दर दृष्टि फेरी है, अपने को टटोला है तो मैं देखता हूँ कि मुझमें बहुत त्रुटियां हैं। जब तक मैंने अपने को नहीं देखा था तब तक मैं भी संसारी लोगों की तरह व्यर्थ में औरों को बुरा भला कहता हुआ सन्तुष्ट फिरता था। आज जब आत्म निरीक्षण करता हूँ, जब अपने अन्दर अधिक घुसता हूँ तो मुझे अपनी कमियां प्रत्यक्ष दीखती हैं। उन्हें देखकर मैं घबरा जाता हूँ। ओह, मेरा मन कितना अशुद्ध है, कितना दुर्वल है। अपनी इन कमियों को देखकर कभी-कभी मैं निराश हो जाता हूँ, सोचने लगता हूँ कि क्या मेरी ये कमियां कभी ठीक भी हो सकती हैं। इसलिए हे करुणा-सागर प्रभो! तुम ही कृपा करो, मेरी इन न्यूनताओं को, मेरी कमियों को, मेरी त्रुटियों को पूरी करो। तुम इन सकल जगत् के पालक हो, मेरी भी रक्षा करो।

हे शक्ति के भण्डार! तुम महान् हो, तुम ज्ञान-बल आदि में महान् हो। तुम्हारी महानता को अनुभव करके, हे अमर आत्मन्! मैं तुम्हारी शरण आ पड़ा हूँ तुम्हारी शरण में आकर मैं तुमसे और क्या मांगूं, मुझे मांगने का शऊर भी नहीं है। मुझे वह ज्ञान ही नहीं है कि अपने योग्य वस्तु को ठीक-ठीक जान सकूं। इसलिए। तुम ही

जिस ज्ञान-ऐश्वर्य को मुझे देने योग्य समझते हो उसे मेरे लिए प्रदान करो। मेरे विकास के लिए अब जिस ज्ञान ऐश्वर्य की आवश्यकता है यह तुम ठीक-ठीक जानते हो, मेरी उन्नति के लिए वह मुझे प्रदान करो। लोग तो न जाने क्या-क्या इच्छायें करते हैं पर हे प्रभो! मैं केवल इतना ही चाहता हूँ कि मैं सदा प्रसन्न रहूँ। हर समय आनन्दित रहूँ। मेरा आनन्द अज्ञान आनन्द न हो। इसलिए इतना और चाहता हूँ कि मैं निरन्तर नव प्रकाश को पाता रहूँ। मैं जानता हूँ कि हमारे प्रभु हमारी दौड़ कर रक्षा करने वाले हैं, आड़े समय पर भक्तों की रक्षा के लिये तुरन्त अपनी रक्षक शक्ति सहित आ पहुँचने वाले हैं। मैं जानता हूँ कि वे प्रभु हम पर ऐसी कृपा करें कि हम उनके ज्ञान-प्रकाश में विकसित होते हुए सदा आनन्दित रहें, हर समय प्रसन्नमना बने रहें। बस, हमें और कुछ नहीं चाहिए और कुछ नहीं चाहिए।

———

हम कितने मूर्ख हैं कि मूल को न सींच कर पत्तों को पानी दे रहे हैं। हे प्रभु! तुम तो सर्व सौभगों के के कल्पतरु हो! परन्तु हम एक तुम्हारा सेवन न कर अपनी भविष्य की इच्छाओं के लिए मारे-मारे फिर रहे हैं। इस संसार में जो भी कुछ विविध प्रकार के ऐश्वर्य दृष्टिगोचर हो रहे हैं, जो भी सुन्दर पदार्थ दीख रहे हैं वे सब के सब तुमसे ही निकले हैं, तुम से ही सर्वत्र फैले हैं।

यह विश्व जिन अनन्त प्रकार की सुन्दर संपत्तियों से भरा पड़ा है, उन सब के मूल में हे सुभग! तुम ही हो। यदि हम तुम्हारी उपासना करें, तुम्हारी शरण में रहने लगें तो सर्वश्रेष्ठ वस्तुएं हमें स्वयमेव मिल जावें। तब वृक्ष के प्राप्त होने पर शेष शाखा, डाली, पुष्प, फल आदि सब कुछ हमें स्वयमेव प्राप्त हो जायेंगे। एक तुम्हारे सेवन से हमें सब कुछ मिल जावेगा, केवल इतना ही नहीं, किन्तु जब हम तेरी उपासना करेंगे, तेरा भजन-ध्यान करेंगे, तो हमें जिस ऐश्वर्य की, जिस क्रम से, जिस मात्रा में आवश्यकता होगी, तभी वह ऐश्वर्य उसी क्रम से, उसी मात्रा में हमें ठीक-ठीक मिलता जावेगा, और बड़ी सुगमता से तुरन्त मिलता जावेगा। और तेरे शरणागत को तेरे उपासक को पाप के नाश के लिए, पाप वृत्तियों से

लड़ने के लिए जीवन युद्ध-युद्ध में विजयी होने के लिए जिस बल-तेज सामर्थ्य की आवश्यकता है वह भी उसे ठीक समय पर मिलता जाता है। इसके बाद उसे महान् दुर्लभ सन्तुष्टि, परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है, फिर भी हम मूर्ख न जाने क्यों तेरे ही भजन-ध्यान में नहीं लगते, एक तुम्ह मूल का आश्रय नहीं लेते।

———

हे भगवन् ! तू मेरी सुन, जरा मेरी प्रार्थना को सुन। तू तो प्रार्थनाओं को ऐसा सुनने वाला है कि तुझ से जो प्रार्थी जो कुछ चाहता है, कामना करता है उसे तू वह प्राप्त करा देता है, उसे वह दे देता है। मैं जानता हूँ, अच्छी तरह जानता हूँ कि मनुष्य को सब कुछ दे देता है, उसकी सब शुभकामनाएँ पूर्ण कर देता है, पर फिर हे प्रभो ! तू मेरी प्रार्थना को क्यों नहीं सुनता, इसे क्यों नहीं पूरी करता। हे इन्द्र ! तू मुझे दृढ़ करदे, पूरा समर्थ बना दे।

तू तो जिसे दृढ़ करना चाहता है, उसे दृढ़ बना देता है, वह पूरी तरह दृढ़ हो जाता है, अडिग हो जाता है, फिर उसे संसार की कोई शक्ति दबा नहीं सकती, वह अछेद्य-अभेद्य हो जाता है। इस संसार के हजारों शत्रु उसे हरा नहीं सकते, लाखों दुःख-क्लेश उसे डरा नहीं सकते, असंख्य प्रलोभन उसे गिरा नहीं सकते, वह पूर्ण दृढ़ हो जाता है।

हे प्रभो ! तू मुझे भी ऐसा वीर बना दे, ऐसा दृढ़ बना दे, तू मेरी प्रार्थना को सुन, मेरी इस कामना को पूर्ण कर।

हे परमेश्वर ! तू सब सन्तों द्वारा स्तुति किया गया

है। मैं भी आज तेरी स्तुति कर रहा हूँ, तू अब तो मुझ उपासक की इच्छाओं को पूर्ण कर दे, मुझे वह इष्ट वस्तु, वह अन्न प्रदान कर जिसका मैं भूखा हूँ, इस अन्न से तू मुझे छका दे। जैसे कि नदियाँ जल से भरपूर हो जाती हैं, वैसे ही तू मुझे मेरे अभीष्ट अन्न से भरपूर कर दे। मैं तो तेरे दर्शन का भूखा हूँ, अपना यह दर्शन देकर तू मुझे पूरी तरह परितृप्त कर दे, छका दे। तेरे इस दर्शन के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं चाहता।



हे परमेश्वर ! हम तेरे हैं, निश्चय से हम तेरे हैं, हम सोच-समझकर तेरे हो चुके हैं, अपने आपको तुझे समर्पित कर चुके हैं, और अब तुझमें ही रहना चाहते हैं, तुझसे ही अपना सब आत्म-विकास पाना चाहते हैं, ज्ञानी भी हम तेरे आश्रय से ही होना चाहते हैं। वह ज्ञान तो ज्ञान नहीं है, निरा अज्ञान है जो तेरे आश्रय से नहीं उत्पन्न हुआ।

हे सदा सब से बहुत बार पुकारे गये प्रभो ! तुझे छोड़ कर हम और कहां जावें, हम तो हे भगवन् ! तेरे होकर शान्त हो गये हैं, पूरी तरह तेरे हो गये हैं।

हम चाहते हैं कि हम आप पूजनीय परमेश्वर की सुमति में रहें, आपके कल्याणकारक आश्रय में बसें, हमें सदा आपकी श्रेष्ठ मति मिलती रहे, आपकी शुभ प्रसन्नता प्राप्त होती रहे। यह सब सुलभ है यदि हम आपका यजन करते रहें। आप ही एकमात्र इस संसार में हम मनुष्यों के पूजनीय हैं, आप ही हमारे रक्षक हैं, आप जैसा श्रेष्ठ रक्षक और कौन हो सकता है। परन्तु आपका यजन करना आसान काम नहीं है, आपके यजन में जो सबसे बड़ा बाधक है, वह हमारा द्वेष है। जरा से भी द्वेष को अपने हृदय में स्थान देकर हम आपका पूजन नहीं

कर सकते। जिसके लिए यह पृथ्वीतल, सारा संसार द्वेषरहित हो गया है वही आपका यजन कर सकता है, इसलिए आप ही हम पर कृपा करें, हम से द्वेष को सर्वथा हटा कर हमें बिल्कुल द्वेषरहित कर दें, प्रेममय बना दें। अहा! सर्वथा द्वेषरहित हो जाना, कभी भी कहीं द्वेष न रहना यह कैसी सुन्दर अवस्था है, कैसी आनन्दमय अवस्था है। उस अवस्था में पहुँचकर ही हम पर आपके आनन्द की वर्षा बरसती है और उस आनन्द में हम स्नान करते हैं, और आनन्द-मग्न रहते हैं।



हे परमेश्वर ! मैं तुझे कभी न बेचूं, किसी भाव न बेचूं। चाहे कोई मुझे हजार देवे, लाख देवे, करोड़ देवे-इस पृथ्वी को स्वर्ण और रत्नों से भर कर देवे, तो भी उनके बदले में कभी तुझे न देऊं, कभी तुझे न छोड़ूं।

हे सब संसार गो वश में करने वाले प्रभो ! अपने सब ऐश्वर्यों सहित यह सम्पूर्ण संसार तो तेरे चरण-रज के एक कण की बराबरी भी नहीं कर सकता। तो हे अनन्त ऐश्वर्यों वाले ! इस संसार का वह कौनसा ऐश्वर्य है, वह कौनसा भोग है, जिसे पाने के लिए मैं तुझे दे दूं, मैं तुझे छोड़ दूं। हे अनन्त आनन्द के भण्डार परमेश्वर ! मैं तेरे अनन्त ऐश्वर्य का क्या वर्णन कर सकता हूं, तेरे मूल्य को क्या जान सकता हूँ। बस, तू तो हे परमेश्वर ! अनमोल है, अनमोल है। और ऐसा अनमोल तू संसार के सभी प्राणियों को प्राप्त हुआ है, सभी जीवों के अन्दर बसा हुआ है, पर ये सोए हुए जीव तुझे नहीं देखते, तेरे मूल्य को नहीं पहचानते, तेरी कीमत को नहीं जानते।

पर तुझ अनमोल रत्न को पाकर अब मैं कैसे कभी तुझे गंवा सकता हूँ ? तुझे पाकर मैंने तो सब कुछ पा लिया है, मुझे तो कोई वस्तु नहीं दीखती, जिसे पाने के

लिए अब मैं तुझे किस वस्तु के बदले दे सकूं । मैं तो अब भयंकर से भयंकर भय उपस्थित हो जाने पर भी मोहक से मोहक प्रलोभनों के आ जाने पर भी तुझे कभी नहीं छोड़ सकता । मैं संसार के सब भोगों को छोड़ दूंगा, मैं असंख्य कष्टों को सह लूंगा, पर मैंने तुझे ऐसा जान लिया है, ऐसा पहचान लिया है, अनुभव कर लिया है कि मैं तेरे त्यागने की बात भी नहीं सोच सकता, मैं तो तुझे छोड़ने का कुछ अर्थ नहीं समझता ।

———

(४८)

अब मुझे प्रभु का दर्शन हुए बिना चैन नहीं मिल सकता। मैं तो अब उस पाप विनाशक देव को साक्षात् देख लेना चाहता हूँ, सोते जागते, उठते बैठते मेरा मन उधर ही गया रहता है। खाते हुए, पीते हुए, चलते हुए, फिरते हुए मुझ में उसी के विषय में नाना प्रकार के विचार-वितर्क उठते रहते हैं। मैं अपने ही मन के साथ अपने ही आप में उस प्रभु के विषय में वार्तालाप करने लगता हूँ। अब कब मैं उस प्रभु के ध्यान में निमग्न हो सकूँगा, क्या कभी मैं उस प्रभु के महान् आश्रय को पाकर उसी के आधार से प्राण धारण करता हुआ निरन्तर उसी में रम सकूँगा ?

मैं तो उसके दर्शन पाने के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा करने के लिए तैयार हूँ। अपनी बड़ी से बड़ी भेंट चढ़ाने को उद्यत हूँ। पर न जाने वह मेरे हव्य को स्वीकार भी करेगा या नहीं ? कहीं वह इसे अयोग्य तो नहीं समझ लेगा, कहीं वह इस क्षुद्र भेंट से अप्रसन्न तो नहीं हो जायगा, क्या वह सचमुच मेरे इस समर्पण को प्रसन्न होता हुआ स्वीकार करेगा ?

न मालूम मेरे लिये भी क्या कभी वह सुदिन होवेगा, जिस दिन प्रभु दर्शन से मैं अपने जीवन को सफल कर सकूँगा। मेरे परम आनन्द का वह दिन मुझे, आनन्द मग्न कर देने वाला वह सुदिन कभी आवेगा, जब कि मैं उस परम सुखारी अपने आनन्दस्वरूप प्रभु का साक्षात् दर्शन कर सकूँगा, आमने-सामने होकर उस का साक्षात् कर सकूँगा।

सुख कारी

वह आ जाता है, निश्चय से वह आ जाता है, हमारे पास आकर प्रकट हो जाता है यदि वह सुन लेवे। बस, उसके सुन लेने की देर है, उस तक अपनी सुनाई करना, अपनी रसाई करना बेशक कठिन है। उस तक हमारी पुकार पहुँच जाय, इसके लिए हम में कुछ योग्यता चाहिए, हम में कुछ सामर्थ्य चाहिए, सच्चे हृदय की पुकार होनी चाहिए। पर इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि वह परमात्म-देव यदि पुकार सुन लेवे, यदि हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लेवे, तो वह निश्चय से आ जाता है और वह आता है अपनी सहस्र प्रकार की रक्षा-शक्तियों के साथ। हमारी रक्षा के लिए मानो वह अनन्त महा शक्तिशाली सेनाओं के साथ आ पहुँचता है। हमारी रक्षा के लिए तो उसकी जरा सी शक्ति ही बहुत होती है, पर तब यह पता लग जाता है कि उसकी रक्षण शक्ति असीम है। वह हमारी पुकार पर अपने ज्ञान-बल के साथ आ पहुंचता है। हम पीड़ितों की रक्षा करता है और हम अज्ञान-अन्धकार में ठोकरें खाते हुओं के लिये ज्ञान-प्रकाश चमका जाता है। पर यदि वह सुन लेवे। कौन कहता है कि वह सुनता नहीं, बेशक हमारी तरह उसके कान नहीं हैं, पर वह परमात्म-देव बिना कान के सुनता है। यदि

हमारी प्रार्थना कल्याण की प्रार्थना होती है और वह सच्चे हृदय से, सर्वात्म भाव से की गई होती है तो उस प्रार्थना में यह शक्ति होती है कि प्रभु के दरबार में पहुँच सकती है। आह, हमारी प्रार्थना भी प्रभु के दरबार में पहुँच सके, हम में इतनी स्वार्थशून्यता, आत्म-त्याग और पवित्रता होवे कि हमारी पुकार उसके यहाँ तक पहुँच सके।

यदि हमारी प्रार्थना में इतनी शक्ति हो, हम अन्धकार में पड़े हुए दुःख पीड़ितों, दुर्बलों के हार्दिक करुण-क्रन्दनों में इतना बल हो कि प्रभु उसे सुन लेवे, तब तो क्षण भर में वे करुणा-सिन्धु हम डूबतों को बचाने के लिए आ पहुँचते हैं। बस हमारी प्रार्थना सच्ची हो, हमारी पुकार में भक्ति का बल हो तो देखो, वे प्रभु अपने सब साजो-सान के साथ, अपने ज्ञान, बल और ऐश्वर्य के साथ, अपनी दिव्य विभूतियों के साथ हम मरतों को बचाने के लिए, हम अन्धों को अपनी ज्योति से चकचौंध करने के लिए आ पहुँचते हैं।

———

हे परम बन्धु ! तुम्हें अपना सखा जानकर अब संसार में और किसी से क्या डरना है ? सर्व बलों के स्वामी तो तुम हो, तुम से बल पाकर कैसा डरना, तुम्हारा सहारा पकड़कर अब कैसा भय, भविष्य चाहे कितना ही अन्धकार मय दीख रहा हो, सामने चाहे कितना ही विकट संकट आता दिखाई देता हो, फिर भी हम निर्भय हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि इन सबको यदि तुम चाहो तो एक क्षण में हटा सकते हो। जब तुमसे नाता जोड़ लिया, जब तुम्हारी राह चल पड़े, तब दुःख पीड़ा, जग, हँसाई आदि को सह लेने में क्या बात है ? तुझ महा बली का नाम लेते हुए हम इन कष्टों को आसानी से हँसते-हँसते सहन करेंगे। तुम्हारे प्यारे मार्ग पर चलते हुए एक बार ही नहीं, लाख बार यदि मौत आवे तो हम उसे प्रसन्नता से स्वीकर करेंगे, इसमें भय की क्या बात है ?

सचमुच हे परमेश्वर ! तेरे सख्य में आकर हम निर्भय हो गये हैं, दुर्लभ अभय को पा गये हैं। अभय बन गये हैं। पर इस उच्च पद को, इस ऊँची अवस्था को प्राप्त होकर भी हे मेरे स्वामी ! हम कभी अभिमान कैसे कर सकते हैं, क्या हम नहीं जानते कि संसार की विजय, तुम्हारे बल द्वारा ही प्राप्त हो रही हैं, तुम ही

संसार में एकमात्र विजय दिलाने वाले हो ।

तुझ शक्तिशाली को कोई पराजित नहीं कर सकता, यह अनुभव करते हुए हे मेरे परम सखा ! ज्यों-ज्यों हम में तुम्हें पाकर आत्म-बल बढ़ता गया है, त्यों-त्यों हम में तुम्हारे प्रति नम्रता बढ़ती गई है, ज्यों:ज्यों तुम्हारी कृपा से हम में निर्भयता आती गई है, त्यों-त्यों तुम्हारे चरणों में भक्ति बढ़ती गई है ।

इसलिए, हे अभयपद प्रदान करने वाले प्रभो ! हम तुम्हें बार-बार प्रणाम करते हैं ।

हे अपराजित ! हम तुम्हारी स्तुति गान करते हैं, तुम्हारा नित्य निरन्तर भजन-ध्यान करते हैं । तम्हारा भजन ध्यान करते हुए हम कभी न थकें, हम कभी न थकें ।

———

मैं डरता क्यों हूँ ? इस परमेश्वर की सृष्टि में रहते हुए तो किसी भी काल में, किसी भी देश में भय का कुछ भी कारण नहीं है। क्या मैं अपने शत्रुओं से डरता हूँ, मेरा तो इस प्रभु की सृष्टि में कोई शत्रु नहीं होना चाहिए, मेरा कोई शत्रु है ही नहीं।

हाँ, जब किसी के स्वार्थ में बाधा पड़ेगी अथवा पड़ने की आशंका होगी, तब वे मुझे अपना शत्रु मानकर नाना प्रकार से सताने, कष्ट देने को भी तय्यार होंगे, पर उस भाई के सताने से भी मेरा क्या बिगड़ेगा, वह तो बेचारा स्वयं परमात्म-देव का मारा हुआ है, परमात्मा तो स्वभावतः शत्रून् विजेता है। यदि वह विश्वास पक्का हो जाय कि परमात्मा शत्रु-नाशक है तो अज्ञानी पुरुषों की ओर से आये हुए बड़े से बड़े कष्टों का, घोर से घोर अत्याचारों का भी भय हट जाय। ऐसा विचार थोड़ी देर आने पर ही एकदम निर्भयता आ जाती है और फिर उसे सचमुच सर्वद्रष्टा समझ लेने पर तो कोई भय रहता ही नहीं। देखो वह विचर्षणि परमेश्वर सब प्राणियों के सब कर्मों को ठीक-ठीक देखता हुआ पाप और पुण्य का फल दे रहा है। वह ठीक ढंग से ठीक समय प्रत्येक पाप का नाश कर रहा है। पापी को परास्त कर रहा है,

तो मुझे डरने की क्या जरूरत है ? मुझे तो कोई दुःख, क्लेश तभी मिलेगा, यदि मेरा ही कोई पाप कर्म उदय होगा, नहीं तो किसी अन्य पुरुष की चाहना से मुझे क्लेश कभी नहीं हो सकता। और यदि मेरे ही अपने पाप कर्मों के कारण कोई कष्ट-क्लेश आता है वह तो आना ही चाहिए, उसे तो मैं खुशी से सह कर निष्पाप होता जाऊँगा, वह कष्ट उस शत्रु का भेजा हुआ नहीं है, किन्तु मेरे प्यारे परमेश्वर का भेजा हुआ है, उसका तो मुझे स्वागत करना चाहिए।

एवं इस संसार में चारों दिशाओं में मेरा अब कोई दुःख दे सकने वाला शत्रु नहीं रहा है। जब से प्रभु को विचर्षणि और शत्रु विजेता जान लिया है तब से मैं अभय होगया हूँ, सब ओर से अभय हो गया हूँ, किसी दिशा से कोई भय नहीं, अभय, अभय।

— —

हे सर्व आश्रय प्रभो ! इस जीवन में मेरे आश्रय का दूसरा कौन स्थान है। मंगलमय प्रभो ! क्या तू ही मेरे सन्तोष का स्रोत नहीं है ? मेरा मंगल तेरे सिवाय और कहां होगा ?

हे पिता ! मेरे अन्तःचक्षुओं को खोल दे, अपने आशीर्वाद से अमृत से मेरे अन्तःकरण को तृप्त एवं पावन करदे, जिससे वह तेरी स्थाई कृपा का मन्दिर बन जाय ।

हे मेरे प्रभो ! मेरे लिये तू सम्पूर्ण उत्तमता की खान है। मैं कुछ नहीं हूँ, मेरा अपना कुछ नहीं है। हे स्वामी ! मुझ पर कृपा कर और अपनी विभूतियों से, अपने सद्गुणों से मेरा अन्तःकरण भर दे। मैं तेरी इच्छा का अनुसरण कर सकूं ऐसी शक्ति मुझे दे !

हे मेरे ईश्वर ! हे मेरे सर्वस्व मैं तेरे सिवाय और किसकी इच्छा करूं और किस अधिक सुख की इच्छा करूँ ?

हे नाथ ! तेरे साथ रहने से सब कुछ आनन्दमय हो जाता है और तुझे भूल जाने से सभी वस्तुयें दुःखदायी हो जाती हैं, तेरे सिवाय और किसी वस्तु में अधिक समय तक सन्तोष नहीं मिल सकता, और तेरी कृपा के

बिना कोई वस्तु आनन्ददायक भी नहीं हो सकती।

जिसने तेरी मधुरता का वास्तविक स्वाद पा लिया है उसके लिए सब कुछ मधुमय है, और जिसे तेरी मधुरता का स्वाद नहीं मिला उसे किसी वस्तु से सन्तोष नहीं होता। जो सांसारिक विषयों की उपेक्षा एवं इन्द्रिय दमन द्वारा तेरी आज्ञा का अनुगमन करते हैं वे ही सद्ज्ञान लाभ करते हैं। जिस समय तू मेरे पास रह कर मुझे तृप्त करते हुए मेरा सर्वस्व और मेरा सखा हो जायगा, वह वांछित समय कब आयेगा? जब तक मुझ पर यह अनुग्रह नहीं होती तब तक पूर्ण आनन्द प्राप्त करना मेरे लिये असम्भव है।

हे प्रभो! तू मुझे आश्रय दे, तू मुझे अपनी कृपा का पात्र बना, मेरे हृदय को प्रकाशित कर, और अपने वरद हस्त को गौरवान्वित होने दे। क्योंकि हे नाथ, हे मेरे ईश्वर! तेरे सिवाय मेरी और कोई आशा, इच्छा नहीं है।

इसलिए तू अपना मुँह मुझसे मत छिपा, दर्शन के बिना आंखें व्याकुल हैं। अब दर्शन देने में विलम्ब मत कर, अपनी सान्त्वना से वंचित मत कर, अन्यथा मेरी आत्मा जलशून्य मरुभूमि में (प्यासी) मछली की तरह तड़पती रहेगी।

❀ भजन ❀

नाम सुनते हैं तेरा रूप दिखाओ तो सही।
सूने मन्दिर में मेरे, ज्योति जगाओ तो सही॥
फूल में गन्ध चमक चन्द्र में डाली तूने।
चाह जिनको है तेरी, उनमें समाओ तो सही॥
धूल मल-मल के अलख द्वार पै जोगी गाते।
अपने गाने की कड़ी कोई सुनाओ तो सही॥
चक्र में घूम चुका चरणों में तेरे आया।
दीन वत्सल हो दया दृष्टि दिखाओ तो सही॥

भजन (॰)

जगदीश शान्त हृदय को मेरे बनाइये,
प्रभाव अपनी कृपा का मुझको दिखाइये।
हो करके साक्षात् मेरे मन में आइये,
और आके यहाँ से फिर कभी बाहर न जाइए॥
अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिये,
प्रकाश युक्त बुद्धि को मेरी बनाइये।
मैं लीन आपमें रहे, भागा फिरे न मन,
इसके लिए लिए विवेक का पहरा बिठाइये॥
भिक्षा मैं माँगता हूँ विनय पूर्वक यही,
कृपा से दान भक्ति का अपनी दिलाइये।
बस आपका भरोसा है, हूँ शरण आपकी,
दुःखों से मरने-जीने के मुझको छुड़ाइये॥

भजन (३)

जीवन नैया भवसागर में,
बढ़ती जाये प्रभु तेरे सहारे।
तुम ही हो रक्षक ऐ मेरे ईश्वर,
याचक आये हैं तेरे द्वारे।।

पाप की आंधी मन घबरायें,
नैया में पानी भर भर आये,
ऐसी दशा में ऐ मेरे ईश्वर,
केवल तुम ही हो रखवारे।। जीवन...

पापों में फँसकर तुझको भुलाया,

जीवन अपना व्यर्थ गंवाया,
रोय रहे दिन रैन हम (मैं) प्रभुजी,
बिगड़ी हमारी आप संवारे।। जीवन...

जीवन की नैया डगमग डोले,
बीच भंवर में खाये झिकोले,
नैया पुरानी मैं अज्ञानी,
मेरे केवल आप सहारे।। जीवन...

❁ भजन ❁

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में,
है जीत तुम्हारे हाथों में है हार तुम्हारे हाथों में।
मेरा निश्चय है एक यही इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं,
अर्पण करदूं जगती भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ... ...

यातो मैं जग से दूर रहूँ, या जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ,
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ... ...

यदि मानुष ही मुझे जन्म मिले, तव चरणों का पुजारी बनूं,
मुझ पूजक की इक रग-रग का हो तार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया

जब-जब संसार का बन्दी बन, दरबार में तेरे आऊँ मैं
हो मेरे पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में
अब सौंप दिया ... ...

मुझ में तुझ में भेद यही, मैं नर हूँ तू नारायण है,
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ... ...

पूज्य स्वामी श्री विवेकानन्द जी महाराज की आध्यात्मिक पुस्तकें

(१) सन्त-वचन-संग्रह प्रथम पुष्प	मूल्य ५० पै
(२) सन्त-वचन-संग्रह द्वितीय पुष्प	मूल्य ५० पैसे
(३) सन्त-वचन-संग्रह तृतीय पुष्प	मूल्य ५० पैसे
(४) सन्त-वचन-संग्रह चतुर्थ पुष्प	मूल्य ५० पैसे
(५) सन्त-वचन-संग्रह पंचम पुष्प	मूल्य ५० पैसे
(६) सन्त-वचन-संग्रह षष्टम पुष्प	मूल्य ५० पैसे
(७) प्रभु प्रार्थना	मूल्य ५० पैसे
(८) शिक्षाप्रद कहानियाँ	मूल्य ५० पैसे

मिलने के पते—

(१) वानप्रस्थाश्रम पुस्तकालय, ज्वालापुर (हरिद्वार)
(२) गुप्ता एण्ड कम्पनी, टोहाना, जि० हिसार।
(३) गुप्ता एण्ड कम्पनी, खारी बावली, देहली।

मुद्रक—प्रताप प्रिंटिंग प्रेस, लाहौरी गेट, दिल्ली—६